अधिकतम तापमान 31.2 >> न्यूनतम तापमान 20.6 >> सूर्योदय 6.04 >> सूर्यास्त 17.42 >>    डॉलर 88.64 » यूरो 102.60 »

देश का विश्वसनीय अखबार

# दैनिक भास्कर

लखनऊ वर्ष-10, अंक-09 शनिवार 11 अक्टूबर 2025 कुल पृष्ठ 18 मूल्य 3.00 रुपये

झांसी, नोएडा, लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित

कुश्ती का खेल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना रहा है :

# धान की सीधी बुवाई पर कृषि विज्ञान केन्द्र कटिया में भव्य प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

**• डीएसआर तकनीक से खेती में क्रांति, वैज्ञानिकों ने बताया वैज्ञानिक प्रबंधन का तरीका**

भास्कर ब्यूरो

सीतापुर। कृषि में बढ़ती लागत, जल संकट और श्रम की कमी की चुनौतियों से निपटने के लिए, कृषि विज्ञान केन्द्र कटिया, सीतापुर द्वारा धान की सीधी बुवाई तकनीक को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक दिवसीय प्रक्षेत्र दिवस का सफल आयोजन किया गया। किसानों में इस नई तकनीक को लेकर जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ हुआ। आयोजन स्थल पर कृषि यंत्रों, बीज पैकेटों, प्रदर्शन प्लॉटों और तकनीकी पोस्टरों की प्रदर्शनी लगाई गई, जिसने इसे शिक्षाप्रद बना दिया।

**लागत कम, उपज ज्यादा**

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. दया एस. श्रीवास्तव ने कहा कि ष्कृषि अब केवल परंपरा नहीं, बल्कि विज्ञान बन चुकी है। उन्होंने किसानों को वैज्ञानिक तरीके से खेती, संतुलित पोषण और खरपतवार नियंत्रण करने की सलाह दी, जिससे उपज में 20 से 25 प्रतिशत तक की वृद्धि सुनिश्चित हो सके। मुख्य वक्ता डॉ. शिशिर कांत सिंह, शस्य वैज्ञानिक, ने इस तकनीक को आज की जलवायु परिस्थितियों में कृषि का भविष्य बताया। उन्होंने इसके फायदों पर प्रकाश डालते हुए कहा इस तकनीक से खेत की तैयारी में समय और लागत दोनों की बचत होती है। इसमें सिंचाई जल और मजदूरी में कमी आती है। डॉ. सिंह ने चेतावनी दी कि इसमें सफल परिणाम के लिए खेत की समतलता, उचित नमी और शुरुआती 30 दिनों में खरपतवार नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है।

**एकीकृत कृषि और अवशेष प्रबंधन पर जोर**

डॉ. आनन्द सिंह, पशु वैज्ञानिक, ने किसानों को एकीकृत कृषि प्रणाली अपनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि पशुपालन को कृषि से जोड़ने पर खेत की उर्वरता बढ़ती है और जैविक खाद की उपलब्धता सुनिश्चित होती है। उन्होंने अवशेष प्रबंधन पर जोर देते हुए कहा, खेतों में अवशेषों को जलाने के बजाय उसका जैविक अपघटन कर मिट्टी में मिलाना चाहिए, जिससे मिट्टी की संरचना सुधरती है और अगली फसल की उत्पादकता बढ़ती है।

**तकनीकी सीख और किसानों को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प**

मुख्य अतिथि एवं प्रायोजक कंपनी किसान क्राफ्ट के हेड-रिसर्च एंड डेवलपमेंट डॉ. सुमन्त होला ने कहा कि उनकी कंपनी का लक्ष्य केवल बीज बेचना नहीं, बल्कि किसानों को आत्मनिर्भर बनाना है। उन्होंने कहा कि सीधी बुवाई तकनीक किसानों की लागत घटाकर उन्हें प्रतिस्पर्धी बना सकती है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह, प्रक्षेत्र प्रबंधक, ने खरपतवार प्रबंधन को इसका सबसे महत्वपूर्ण पहलू बताया। उन्होंने सलाह दी कि किसान बुवाई के तुरंत बाद प्री-इमर्जेंस हर्बीसाइड (जैसे ब्यूटाक्लोर या पेंडिमेथालिन) और 20/25 दिन बाद पोस्ट-इमर्जेंस हर्बीसाइड का प्रयोग अनिवार्य रूप से करें, जिससे उपज में 15/20 प्रतिशत तक वृद्धि संभव है। इस कार्यक्रम में क्षेत्र के 82 प्रगतिशील किसानों, 7 बीज विक्रेताओं और कृषि विभाग के 4 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई और सफल किसानों को पुरस्कृत भी किया गया।

कैनविज टाइम्स

# विज्ञान केन्द्र कटिया में भव्य प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन धान की सीधी बुवाई पर कृषि

सीतापुर। धान की सीधी बुवाई **(DSR)** तकनीक को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कृषि विज्ञान केन्द्र कटिया, सीतापुर द्वारा एक दिवसीय प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना व परिषद गीत के साथ हुआ। इसके पश्चात सभी अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र प्रदान कर किया गया। परिसर में किसानों का उत्साह सीधी बिजाई तकनीक को लेकर दिखाई दिया। कृषि यंत्रों, बीज पैकेटों, प्रदर्शन प्लॉटों और तकनीकी पोस्टरों की प्रदर्शनी ने आयोजन को शिक्षाप्रद बना दिया।डॉ. दया एस. श्रीवास्तव, अध्यक्षता करते हुए कहा कि ल्लकृषि अब केवल परंपरा नहीं बल्कि विज्ञान बन चुकी है। यदि किसान वैज्ञानिक तरीके से खेत तैयार करें, फसल का पोषण संतुलित रखें और खरपतवार नियंत्रण करें तो उपज में **20ऽ25%** की वृद्धि निश्चित है। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रम किसानों के बीच जागरूकता फैलाने का सर्वोत्तम माध्यम हैं।कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. शिशिर कांत सिंह, शस्य वैज्ञानिक, ने कहा कि धान की सीधी बुवाई **(DSR)** तकनीक आज की जलवायु परिस्थितियों में कृषि का भविष्य है। उन्होंने बताया कि धान की सीधी बुवाई से खेत की तैयारी में समय और लागत दोनों की बचत होती है।

KisanKraft®

• IN NEWS

lokbharti.co.in | Lok Bharti Digital | Lokbhartipage | lokbhartiDigit-1 | Lokbhartidigital

**सुविचार**

यदि आप एक सुखी जीवन जीना चाहते हैं,तो इसे एक लक्ष्य से बांधें न कि लोगों या चीजों से !

वर्ष-23, अंक 255
पृष्ठ 08, मूल्य 3.00 रुपया

# लोक भारती

लखनऊ | शनिवार | 11 अक्टूबर, 2025

लखनऊ-कानपुर से एक साथ प्रकाशित

**चांद का दीदार कर, मांगा अखंड सुहाग**

करवा चौथ पर सुहागिनों चांद का दीदार करके अपना व्रत का पारण किया सूर्योदय से लेकर चंद्रोदय तक सुगाहिन महिलाएं निर्जला व्रत रखा। भगवान शिव, माता पार्वती और चौथ माता की पूजा की, और रात को चांद के निकलने पर अर्घ्य दिया।

भारतीय विदेश नीति के 'संतुलन' की परीक्षा 06 | जर्जर बस स्टैंड बना यात्रियों की परेशानी का सबब 12

# धान की सीधी बुवाई : कृषि में नई राह, किसानों में दिखा उत्साह

## डीएसआर तकनीक से खेती में नई दिशा, वैज्ञानिकों ने साझा किए प्रबंधन के गुर

**विशेषज्ञों ने बताया खेती में संसाधन बचत का तरीका, किसानों ने अनुभव साझा किए**

**डीएसआर तकनीक के लाभ**

पानी की 25प्रतिशत तक बचत, मजदूरी लागत में 30प्रतिशत तक कमी, समय और संसाधनों की बचत, खरपतवार नियंत्रण और उत्पादन में बढ़ोतरी, जलवायु परिवर्तन के अनुरूप टिकाऊ खेती का विकल्प।

**विशेषज्ञों का संदेश**

खेत को समतल रखें, उचित नमी बनाए रखें, खरपतवार नियंत्रण को प्राथमिकता दें, पशुपालन और खेती को जोड़कर आय बढ़ाएँ।

मानपुर/सीतापुर। आधुनिक कृषि तकनीकों के प्रसार और किसानों को प्रगतिशील खेती से जोड़ने के उद्देश्य से कृषि विज्ञान केन्द्र कटिया सीतापुर में धान की सीधी बुवाई पर एक दिवसीय प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पारंपरिक विधियों से इतर यह आयोजन पूरी तरह तकनीकी जागरूकता पर केंद्रित रहा। दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इसके बाद अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ व अंगवस्त्र देकर किया गया। आयोजन स्थल पर किसानों की भारी उपस्थिति ने उनके उत्साह को स्पष्ट कर दिया। कृषि यंत्रों, बीज, तकनीकी पोस्टरों और प्रदर्शन प्लॉटों की प्रदर्शनी ने इस कार्यक्रम को शिक्षाप्रद बना दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. दयाएस. श्रीवास्तव ने कहा कि अब खेती महज परंपरा नहीं, बल्कि विज्ञान और प्रबंधन का संगम बन चुकी है। उन्होंने कहा। यदि किसान वैज्ञानिक तकनीक अपनाते हैं तो उपज में 20 से 25 प्रतिशत तक बढ़ोतरी संभव है। मुख्य वक्ता डॉ. शिशिर कांत सिंह ने डीएसआर (डायरेक्ट सीडेड राइस) तकनीक को बदलते कृषि परिदृश्य में कारगर बताते हुए कहा कि लेजर लैंड लेवलर, रोटावेटर और सीड ड्रिल मशीन की मदद से खेत को समतल कर सीधा बीज डालने की विधि से पानी और श्रम दोनों में बचत होती है। उन्होंने जोर दिया कि डीएसआर में सफलता के लिए खेत की समतलता, नमी और खरपतवार नियंत्रण अनिवार्य है। पशु वैज्ञानिक डॉ. आनन्द सिंह ने किसानों से एकीकृत कृषि प्रणाली अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि पशुपालन के साथ खेती जोड़ने से खेत की उर्वरता बढ़ती है और जैविक खाद की उपलब्धता सुनिश्चित होती है। मुख्य अतिथि किसान क्राफ्ट के हेड रिसर्च एंड डेवलपमेंट डॉ. सुमन्त होला ने कहा कि उनकी कंपनी किसानों को उन्नत बीज, तकनीक और प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाना चाहती है। पीडी मैनेजर डॉ. किसन जीत सिंहा ने बीजों की गुणवत्ता और सीधी बुवाई के लाभों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम के संयोजक एवं नोडल अधिकारी डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि यह आयोजन खेत से खेत तक आधुनिक खेती का संदेश पहुँचाने की दिशा में एक सार्थक कदम है। कार्यक्रम में 82 प्रगतिशील किसान, 7 बीज विक्रेता और कृषि विभाग के 4 अधिकारी शामिल हुए। अंत में किसानों के लिए प्रश्नोत्तर सत्र और पुरस्कार वितरण भी किया गया।

6 राज्य
2 केंद्रशासित प्रदेश
22 संस्करण
राजधानी
वर्ष 18 | अंक 110 | पृष्ठ : 20+4=24
मूल्य : सात रुपये

# अमर उजाला

लखनऊ
बुधवार, 15 अक्तूबर 2025
कार्तिक कृष्ण-नवमी
विक्रम संवत 2082

# किसानों को दिया धान की बोआई का प्रशिक्षण

भीटी के रैमलपुर में गोष्ठी के दौरान उपस्थित किसान। -संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

**भीटी (अंबेडकरनगर)।** तहसील भीटी क्षेत्र के रैमलपुर गांव में मंगलवार को किसान क्राफ्ट के तत्वावधान में डीडीएसआर पर एक दिवसीय प्रदर्शन व किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कृषि विज्ञान केंद्र पांती के अध्यक्ष डॉ. रामजीत ने कहा कि धान की खेती ड्राई डायरेक्ट शीडेड राइस (डीडीएसआर) तकनीक बहुपयोगी है। इस विधि में सूखे, समतल और अच्छी तरह से तैयार खेत में सीधे धान के बीज की बोआई बिना नर्सरी के की जा सकती है। यह तकनीक किसानों पारंपरिक तरीकों की तुलना में 50 प्रतिशत तक पानी की बचत करती हैं।

किसान क्राफ्ट के सहायक प्रबंधक आलोक जैन ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाली धान की किस्में स्वाद और गुणवत्ता में किसी प्रकार की कमी नहीं होने देती हैं। इस मौके पर चंद्र प्रकाश वर्मा, जयप्रकाश वर्मा, वेद प्रकाश श्रीवास्तव, ओम प्रकाश सिंह, अनिल कुमार सिंह, रामजन्म तिवारी और अवधेश आदि किसान उपस्थित रहे।

KisanKraft®

IN NEWS

हिन्दुस्तान
भरोसा नए हिन्दुस्तान का

# डीसीआर तकनीक से खेती लाभकारी

कटेहरी। किसानों को आधुनिक तरीके से जोड़ने की दिशा में किसानक्राफ्ट ने कटेहरी के रैमलपुर में सूखे सीधे बीज वाले धान पर एक तकनीकी प्रदर्शन किया। इसका उद्देश्य किसानों को डीएसआर तकनीक के लाभों से परिचित कराना और धान की खेती में पानी की बचत व लागत में कमी के उपायों पर जागरूक करना है। कृषि विज्ञान केन्द्र प्रमुख डा.रामजीत ने कहा कि धान की खेती देश की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है लेकिन घटते जल स्तर व बढ़ती लागत से किसानों के सामने चुनौती बन रही है। डीसीआर तकनीक से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। किसानक्राफ्ट के असिस्ट प्लांगर डेवलपमेंट मैनेजर आलोक जैन ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग सें किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीला है और स्वाद में कोई अंतर नहीं आता है।

तकनीक का प्रदर्शन करते कृषि विज्ञान केन्द्र प्रमुख

स्वतंत्र प्रभात
15 Oct 2025 - Page 6

# किसान क्राफ्ट ने सूखे सीधे बीज वाले धान पर आयोजित किया एक प्रदर्शन कार्यक्रम

**स्वतंत्र प्रभात संवाददाता**

**अम्बेडकरनगर।** किसानों को आधुनिक कृषि तकनीक से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत किसान क्राफ्ट ने जनपद के रैमलपुर गांव में "सूखे सीधे बीज वाले धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस - KVK)" पर एक तकनीकी प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को डीएसआर तकनीक के लाभों से परिचित कराना और धान की खेती में पानी की बचत, लागत में कमी तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना था। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) प्रमुख डॉ. रामजीत ने कहा कि "धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है, लेकिन घटता जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने बड़ी चुनौती है। डीएसआर तकनीक अपनाने से किसान समान उत्पादन के साथ लगभग 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं।"

किसानक्राफ्ट के असिस्टेंट मैनेजर (डेवलपमेंट) आलोक जैन ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान की तकनीक से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। यह पद्धति पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीली है और इससे उत्पादित धान के स्वाद में कोई अंतर नहीं आता। वहीं आर एंड डी हेड डॉ. सुमंत होल्ला ने कहा कि "डीएसआर तकनीक से नर्सरी, पोखरिंग, समतलीकरण और रोपाई की आवश्यकता समाप्त हो जाती है, जिससे श्रम लागत में भारी कमी आती है। यह न केवल पर्यावरण के अनुकूल है बल्कि मीथेन गैस के उत्सर्जन को भी कम करती है।" कृषि विशेषज्ञ डॉ. मार्श मणि पांडेय ने कहा कि प्रदेश में लो-मीथेन धान को बढ़ावा देने के तहत डीएसआर तकनीक को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे जल संरक्षण और पर्यावरण सुरक्षा दोनों में सहयोग मिल रहा है।

कार्यक्रम का आयोजन एफपीओ डायरेक्टर चंद्रप्रकाश वर्मा के सहयोग से किया गया। इस अवसर पर किसानक्राफ्ट के सेल्स मैनेजर रत्नेश विश्वकर्मा ने बताया कि कंपनी एक आईएसओ-प्रमाणित निर्माता, थोक आयातक और उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों की वितरक है। देशभर में 5000 से अधिक डीलरों, एक विनिर्माण इकाई और 14 क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से किसानक्राफ्ट सीमांत किसानों की पैदावार बढ़ाने और उनकी आजीविका सुधारने में कार्यरत है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे और उन्होंने डीएसआर तकनीक के व्यावहारिक लाभों का प्रत्यक्ष अनुभव किया। इस दौरान किसान वेद प्रकाश श्रीवास्तव, जयप्रकाश वर्मा, ओम प्रकाश सिंह, अनिल कुमार सिंह, रामजन्म तिवारी, मनोज कुमार तिवारी, ओमप्रकाश वर्मा, रामकृष्ण वर्मा, रामकुमार वर्मा, नीरज वर्मा, श्याम सिंह समेत अनेक किसानों ने भागीदारी की।

KisanKraft®

# IN NEWS

## सीतापुर–गुरु ने छोड़ी BJP,BSP के हाथी पर हुए सवार,पूर्व विधायक राधेश्याम जायसवाल अब क्या करने जा रहे

https://youtu.be/xmfobCXQFs4

## Sitapur -क्या है डीएसआर तकनीक,किसानों को कैसे होगा मुनाफा!

https://youtu.be/E5PnTtqs8qg?si=ofv8r0dAjtVHt1%E0%A4%97%E0%A4%B2

## धान की सीधी बुवाई को लेकर कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को दिखाई नहीं राह

https://youtu.be/Xx1JkS3axjU

EVENT: 01-11-2025, Varanasi
Published in: Amar Ujala

## के स्टॉल

**वाराणसी।** बड़ा लालपुर स्थित दीनदयाल हस्तकला संकुल में गांधी शिल्प बाजार
20 राज्यों से आए 150 उद्यमियों ने हस्तशिल्प उत्पादों के स्टॉल लगाए। इसके माध
उन्हें उद्यमियों को उनके उत्पादों की बिक्री के लिए नया मंच उपलब्ध कराया गया।
मुख्य रूप से हथकरघा बुनकरों के उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई गई।

पूर्वांचल निर्यातक संघ एवं वस्त्र मंत्रालय के ओर से आयोजित 10 दिवसीय गांध
बाजार का निरीक्षण शनिवार को राज्यमंत्री रविंद्र जायसवाल, वस्त्र मंत्रालय के वरिष्
सहायक निदेशक सरोज कुमार सिंह, सहायक निदेशक प्रद्युमन पांडेय, पूर्वांचल निय
संघ के अध्यक्ष रघु मेहरा और भाजपा महामंत्री नवीन कपूर ने किया। मंत्री रविंद्र जा
ने हस्तशिल्पियों के स्टॉलों पर जाकर उत्पादन की बारीकियां देखीं। रघु मेहरा ने कहा
कार्यक्रम का उद्देश्य हस्तशिल्पियों की ओर से बनाए गए उनके उत्पादों को बाजार
कराना व उनका प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ाने को प्रेरित करना है।

भाजपा महामंत्री नवीन कपूर ने कहा कि मेला लगने से हस्तशिल्पियों की कला व
विशिष्ट पहचान मिल सकेगी। मेले में कर्नाटक, गुजरात, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश
नागालैंड, झारखंड, बिहार, राजस्थान, उड़ीसा, उत्तराखंड, बंगाल असम के कुल 20
से हस्तशिल्पी वाराणसी आए हैं। स्वागत वरिष्ठ सहायक निदेशक (हस्तशिल्प) सरो
कुमार सिंह ने किया। धन्यवाद और आभार पूर्वांचल निर्यातक संघ के कोषाध्यक्ष राज
कुशवाहा ने किया। अनिल अग्रवाल, अमिताभ सिंह, रईस अहमद रहे। ब्यूरो

## खराब फसलों का किया निरीक्षण

**वाराणसी।** चिरईगांव में उप कृषि निदेशक अमित जायसवाल ने टीम के साथ शनिवार को ग्राम अम्बा, छितौना, जाल्हूपुर और विशुनपुरा में लगातार बारिश से फसलों के नुकसान का जायजा लिया। खेतों में जलभराव और फसलों के गिरने से धान की बालियों में दाने भरने की प्रक्रिया प्रभावित हुई है। प्रभावित किसानों से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लाभ दिलाने की अनुशंसा की। संवाद

## धान की सीधी बोआई के लाभ गिनाए

**राजातालाब।** इरी के कृषि वैज्ञानिकों ने शनिवार को शाहंशाहपुर में किसानों से संवाद किया। कहा कि किसानों को नवीन कृषि पद्धति और बदलते समय में कृषि के बीच समन्वय स्थापित करने की जरूरत है। किसान क्राफ्ट की ओर से प्रौद्योगिकी प्रदर्शन में धान की सीधी बोआई और उसके लाभ के बारे में बताया गया। वैज्ञानिक डॉ. विपिन कुमार डॉ. सौजन्य सहायक प्रबंधक आलोक जैन और शिवाकांत सिंह रहे। संवाद

## सब्जी की खेती की तकनीक से कराया रूबरू

**वाराणसी।** भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान शाहंशाहपुर की ओर से शनिवार को सोनभद्र के नगवा ब्लॉक के रामपुर गांव में जनजाति गौरव वर्ष पखवाड़ा के तहत भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर जनजातीय सामाजिक आर्थिक विकास के प्रति जागरूक किया गया। निदेशक डॉ. राजेश कुमार और नोडल अफसर डॉ. नीरज सिंह के निर्देशन में 100 आदिवासी किसानों और महिलाओं को जागरूकता किया गया। वैज्ञानिक डॉ. विकास, डॉ. सुदर्शन और अजय कुमार रहे। संवाद

## दलहनी व तिलहनी फसलों को भी रखें

**लोहता।** अपर कृषि निदेशक (प्रसार) लखनऊ के राजेंद्र कुमार सिंह ने शनिवार को कलेक्ट्रीफार्म के कृषि भवन सभागार में आत्मा योजना के तहत आत्मा कार्मिकों (बीटीएम व एटीएम) के कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने फार्म स्कूल, फसल प्रदर्शन, प्रशिक्षण पर चर्चा की। संयुक्त कृषि निदेशक शैलेंद्र कुमार, उप कृषि निदेशक अमित जायसवाल, एसडीओ निरूपमा सिंह रहे। संवाद

# Published in: Dainik Jagaran


8, NEELAM & COMPANY - 9455203178, RADHE KRISHNA ENTERPRISES -
: OM APPLIANCES- 8604978136, GARWAR : PRASHANT ELECTRONIC -
PURWANCHAL FURNITURE - 8756019499, LATGHAT: VINOD BARANWAL
9506537839 AZAMGARH : SINGHAL ELECTRONIC - 9450716009, ZARA
415866854, KADIPUR : VIKRAM FURNITURE - 9670992001




## गम

### षणा

### न करोड़ की र्च होंगे

ुत बिल 90
रखरखाव सात
प्रकाश स्टोर
मार्ग प्रकाश
.60 करोड़ तथा
त करोड़ से आठ
क मरम्मत चार
थ व गलियों के
नेक शौचालय
गा घाट मरम्मत
था घाटों की
से पांच करोड़ हो
5 लाख से 25
करोड़ से तीन
रोड़ से 6 करोड़
गतान 9 करोड़

और दुकानदारों
क लाख से 10
जुर्माना मद में
प्रविधान जोड़ा
लाख से 15
आयोग से चार
गया। नया मद
हेल्थ सर्विलांस
रोड़ का प्रावधान
य निगरानी पर
मानत धनराशि
बढ़ाई गई।

# धान की सीधी बुवाई के लिए किसानों को किया प्रशिक्षित

**जासं, राजातालाब** : आराजी लाइन विकासखंड क्षेत्र के शाहंशाहपुर गांव में शनिवार को किसानक्राफ्ट ने किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान (डीडीएसआर) प्रौद्योगिकी प्रदर्शन आयोजित किया गया। जिसमें किसानों को सूखे खेत में धान की सीधी बुवाई की विधि एवं फायदों के बारे में प्रशिक्षित किया गया। ईरी के वैज्ञानिक डा. विपिन कुमार ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान का लाभ यह है कि यह धान की खेती के लिए जरूरी पानी की तुलना में 30 प्रतिशत कम पानी का उपयोग करता है। यह फसल कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगाई जा सकती है। सूखा प्रत्यक्ष बीजित धान सूखे खेतों में सूखा प्रत्यक्ष बीजारोपण है। कार्यक्रम में किसान क्राफ्ट के असिस्टेंट मैनेजर आलोक जैन, शिवाकान्त सिंह अग्रोनामिस्ट किसान क्राफ्ट लि, सेल्स मैनेजर हंसराज यादव, डा. सौजन्या ने उपस्थित किसानों को जानकारी दी।


ROHIT LAPROSCOPIC SURGICAL CENTRE

लेजर सर्जरी | इण्डोस्कोपिक | गैस्ट्रोस्कोपिक | ई.आर.सी.पी.

DR. ATRII GUPTA
MBBS. MS. DNB. FIAGES.
Laproscopic and General Surgeon

पेट रोग विशेषज्ञ

- सभी प्रकार की पथरी
- गुर्दे की पथरी
- मूत्राशय तथा मूत्र मार्ग की पथरी
- पित्त की पथरी
- प्रांस्टेट

होल्मियम लेजर द्वारा सर्जरी

आयुष्मान भारत व एवं निजी स्वास्थ्य बीमा योजनाओं से सम्बद्ध हॉस्पिटल

माँ राजेश्वरी नगर कालोनी, होटल पद्मिनी के पीछे, सिगरा-महमूरगंज रोड, वाराणसी

कॉल करें : 9839164589

Published in: Hindustan

हिन्दु

# धान को सीधे बोने का दिया प्रशिक्षण

**जक्खिनी।** शहंशाहपुर में धान की सीधी बोआई को अपनाने के लिए शनिवार को किसान क्राफ्ट और इरी की ओर से किसानों को प्रशिक्षण दिया गया। विशेषज्ञों ने बताया कि इस विधि से धान की खेती में 30% कम पानी खर्च होता है।

इरी के डॉ. विपिन कुमार, डॉ. सौजन्या, किसान क्राफ्ट के असिस्टेंट मैनेजर आलोक जैन, शस्य विज्ञानी शिवाकान्त सिंह, सेल्स मैनेजर हंसराज यादव ने जानकारियां साझा कीं। इस मौके पर प्रगतिशील किसान लल्लन दुबे, भूपेंद्र सिंह मौजूद रहे।

[redacted]

Published in: Rashtriya Sahara

# धान की सीधी बुवाई के लिए किसानों को किया प्रशिक्षित

**जक्खिनी/वाराणसी।** आराजी लाइन विकासखंड क्षेत्र के शाहंशाहपुर गांव में शनिवार को किसान क्राफ्ट ने किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान (डीडीएसआर) प्रौद्योगिकी प्रदर्शन आयोजित किया गया। जिसमें किसानों को सूखे खेत में धान की सीधी बुवाई की विधि एवं फायदों के बारे में प्रशिक्षित किया गया।

ईरी के वैज्ञानिक डॉ. विपिन कुमार ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान का लाभ यह है कि यह धान की खेती के लिए आवश्यक पानी की तुलना में 30% कम पानी का उपयोग करता है और उर्वरक, कीटनाशकों, श्रम लागत और ग्रीनहाउस गैस (मीथेन) उत्सर्जन की मात्रा को कम करता है। एक किलोग्राम पारंपरिक धान के उत्पादन के लिए 5,000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है, जबकि सूखे प्रत्यक्ष बीज वाले धान के लिए 2,000-2,500 लीटर के बीच की आवश्यकता होती है। यह फसल कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगाई जा सकती है। सूखा प्रत्यक्ष बीजित धान सूखे खेतों में सूखा प्रत्यक्ष बीजारोपण है। खेतों में पोखर डालने की जरूरत नहीं है। फसल चक्रण संभव है। दालों, सब्जियों और तिलहनों के साथ सहफसलन भी संभव है। इससे मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार होता है। कार्यक्रम में किसान क्राफ्ट के असिस्टेंट मैनेजर आलोक जैन, शिवाकान्त सिंह अग्रोनामिस्ट किसान क्राफ्ट लि. के सेल्स मैनेजर हंसराज यादव, डॉ. सौजन्या ने उपस्थित किसानों को विस्तार पूर्वक जानकारी दी।

Published in: Sampark Dhoot

# किसान क्राफ्ट कंपनी ने किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान प्रौद्योगिकी प्रदर्शन का किया आयोजन

**संपर्क दूत एस के विकास**

वाराणसी/-शाहंशाहपुर किसान क्राफ्ट कंपनी ने किसानों को सूखे सीधे बीज वाले धान उगाने के फायदों के बारे में बताया कि आईएसओ-प्रमाणित निर्माता,उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों के थोक आयातक और वितरक किसानक्राफ्ट ईरी के वैज्ञानिक डॉ विपिन कुमार ने बताया कि किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान पर एक प्रदर्शन आयोजित किया गया जिसमे किसानो को सूखे सीधे बीज वाले धान का लाभ यह है कि यह धान की खेती के लिए आवश्यक पनी की तुलना में 30त कम पानी का उपयोग करता है और उर्वरक,कीटनाशकों,श्रम लागत और ग्रीनहाउस गैस (मीथेन) उत्सर्जन की मात्रा को कम करता है।एक किलोग्राम पारंपरिक धान के उत्पादन के लिए 5,000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है,जबकि सूखे प्रत्यक्ष बीज वाले धान के लिए 2,000-2,500 लीटर के बीच की आवश्यकता होती है।यह फसल कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगाई जा सकती है।सूखा प्रत्यक्ष बीजित धान सूखे खेतों में सूखा प्रत्यक्ष बीजारोप है।खेतों में पोखर डालने की जरूरत नहीं है।इस मौके पर किसान क्रॉफ्ट की मैनेजर सौजन्या शिवाकांत थे।

Published in: Savera News Kashi

सवेरा न्यूज़ काशी न.1
खबर वह विज्ञापन, इंटरव्यू व स्टोरी के लिए संपर्क करें:- 9555709127
दिनांक
02/11/2025

# किसान क्राफ्ट कंपनी ने किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान प्रौद्योगिकी प्रदर्शन का किया आयोजन...

रिपोट- एस के श्रीवास्तव विकास

वाराणसी/-शाहंशाहपुर किसान क्राफ्ट कंपनी ने किसानों को सूखे सीधे बीज वाले धान उगाने के फायदों के बारे में बताया कि आईएसओ-प्रमाणित निर्माता,उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों के थोक आयातक और वितरक किसानक्राफ्ट ईरी के वैज्ञानिक डॉ विपिन कुमार ने बताया कि किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान पर एक प्रदर्शन आयोजित किया गया जिसमे किसानो को सूखे सीधे बीज वाले धान का लाभ यह है कि यह धान की खेती के लिए आवश्यक पानी की तुलना में 30% कम पानी का उपयोग करता है और उर्वरक,कीटनाशकों,श्रम लागत और ग्रीनहाउस गैस (मीथेन) उत्सर्जन की मात्रा को कम करता है।एक किलोग्राम पारंपरिक धान के उत्पादन के लिए 5,000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है,जबकि सूखे प्रत्यक्ष बीज वाले धान के लिए 2,000-2,500 लीटर के बीच की आवश्यकता होती है। यह फसल कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगाई जा सकती है।सूखा प्रत्यक्ष बीजित धान सूखे खेतों में सूखा प्रत्यक्ष बीजारोप है।खेतों में पोखर डालने की जरूरत नहीं है।इस मौके पर किसान क्रॉफ्ट की मैनेजर सौजन्या शिवाकांत थे।

Published in: saveranewskashi

वाराणसी

वाराणसी। रविवार • 2 नवम्बर • 2025

राष्ट्रीय सहारा | www.rashtriyasahara.com

# धान की सीधी बुवाई के लिए किसानों को किया प्रशिक्षित

**जक्खिनी/वाराणसी।** आराजी लाइन विकासखंड क्षेत्र के शाहंशाहपुर गांव में शनिवार को किसान क्राफ्ट ने किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान (डीडीएसआर) प्रौद्योगिकी प्रदर्शन आयोजित किया गया। जिसमें किसानों को सूखे खेत में धान की सीधी बुवाई की विधि एवं फायदों के बारे में प्रशिक्षित किया गया।

ईरी के वैज्ञानिक डॉ. विपिन कुमार ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान का लाभ यह है कि यह धान की खेती के लिए आवश्यक पानी की तुलना में 30% कम पानी का उपयोग करता है और उर्वरक, कीटनाशकों, श्रम लागत और ग्रीनहाउस गैस (मीथेन) उत्सर्जन की मात्रा को कम करता है। एक किलोग्राम पारंपरिक धान के उत्पादन के लिए 5,000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है, जबकि सूखे प्रत्यक्ष बीज वाले धान के लिए 2,000-2,500 लीटर के बीच की आवश्यकता होती है। यह फसल कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगाई जा सकती है। सूखा प्रत्यक्ष बीजित धान सूखे खेतों में सूखा प्रत्यक्ष बीजारोपण है। खेतों में पोखर डालने की जरूरत नहीं है। फसल चक्रण संभव है। दालों, सब्जियों और तिलहनों के साथ सहफसलन भी संभव है। इससे मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार होता है। कार्यक्रम में किसान क्राफ्ट के असिस्टेंट मैनेजर आलोक जैन, शिवाकान्त सिंह अग्रोनामिस्ट किसान क्राफ्ट लि. के सेल्स मैनेजर हंसराज यादव, डॉ. सौजन्या ने उपस्थित किसानों को विस्तार पूर्वक जानकारी दी।

Published in: saveranewskashi

# किसान क्राफ्ट कंपनी ने किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान प्रौद्योगिकी प्रदर्शन का किया आयोजन

Click here to read article

EVENT: 24-10-2025, KVK, Raebareli
Published in: Amar Ujala

my city
लखनऊ | शनिवार ▪ 25.10.2025
अमर उजाला
3
amarujala.com/lucknow

# डीएसआर तकनीक से पानी की बचत करें किसान

कृषि विज्ञान केंद्र में शुक्रवार को आयोजित किसान गोष्ठी में मौजूद किसान। स्रोत- विभाग

संवाद न्यूज एजेंसी

### केवीके दरियापुर में कृषि वैज्ञानिकों ने किया जागरूक

रायबरेली। दरियापुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में शुक्रवार को किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के लिए किसान क्रॉफ्ट लिमिटेड की ओर से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित हुआ। डॉ. सुमंत होल्ला ने कहा कि धान की खेती की देश की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका है, लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है। डीएसआर तकनीक (लाइन से सीधी बुवाई) से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं।

कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. केके सिंह ने कहा सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीली है और इसके स्वाद में भी कोई अंतर नहीं है। कृषि विशेषज्ञ डॉ. राणा प्रताप सिंह ने कहा कि प्रदेश में डीएसआर खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है । यह न केवल पानी की बचत करती है बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम योगदान दे रही है। इस मौके पर राजकुमार, अशोक त्रिपाठी, अनुज सिंह व हरिनाम वर्मा मौजूद रहे।

Published in: Amrut Vichar

# कृषि विज्ञान केंद्र में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

आयोजित कार्यक्रम में शामिल अधिकारी व किसान।

अमावां, रायबरेली, अमृत विचार। शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र दरियापुर में किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के लिए किसान क्रॉफ्ट लिमिटेड द्वारा जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जिले के विभिन्न गांव के किसानों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम में कृषि विशेषज्ञों व किसान क्रॉफ्ट से डॉक्टर सुमंत होल्ला द्वारा उन्नत खेती के गुर सिखाए गए। डॉ सुमंत होल्ला ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है। लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है। कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. केके सिंह ने कहा कि सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावां डॉ. किसंजीत सिन्हा, कृषि विशेषज्ञ डॉ. राणा प्रताप सिंह, जोनल मैनेजर दीपक सिंह ने किसानों को खेती में पैदावार बढ़ाने और उनकी आजीविका में सुधार के प्रति जागरूक किया गया। इस मौके पर आलोक जैन, राजकुमार, अशोक त्रिपाठी, अनुज सिंह, हरि नाम वर्मा, संजय बाजपेई, अनूप कुमार, अभिषेक राय, काली शंकर शुक्ला, रामनारायण चौधरी आदि किसान मौजूद रहे।

Published in: Awadh Ki duniya

# आधे खर्चे में ज्यादा मुनाफा देती है आधुनिक खेती डॉक्टर होल्ला

**ब्यूरो चीफ संजय सिंह**

रायबरेली । शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र दरियापुर में किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के लिए किसान क्रॉफ्ट लिमिटेड द्वारा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया । कार्यक्रम में जिले के विभिन्न गांव से आए एक आए किसानों ने हिस्सा लिया । कार्यक्रम में कृषि विशेषज्ञों व किसान क्रॉफ्ट से डॉक्टर सुमंत होल्ला द्वारा उन्नत खेती के गुर सिखाए गए । आज किसानक्राफ्ट लिमिटेड द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित किसानों के जागरूकता कार्यक्रम में उपस्थित किसानों को संबोधित करते हुए डॉ सुमंत होल्ला ने कहा धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है । लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है । डीएसआर तकनीक (लाइन से सीधी बुवाई ) से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं । कृषि विज्ञान केंद्र के

अध्यक्ष डॉ केके सिंह ने कहा सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं । यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीली है और स्वाद में कोई अंतर नहीं आता । डॉ किसंजीत सिन्हा ने कहा कि डीएसआर तकनीक से नर्सरी पोखरिंग समतलीकरण और रोपाई की आवश्यकता समाप्त हो जाती है जिससे श्रम लागत में भारी कमी आती है । यह पर्यावरण के अनुकूल है । क्योंकि इसमें मीथेन उत्सर्जन कम होता है । और कीटों व बीमारियों का प्रकोप भी घटता है । कृषि विशेषज्ञ डॉ. राणा प्रताप सिंह ने कहा कि यूपी में डीएसआर खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है । यह न केवल पानी की बचत करती है बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम योगदान देती है । किसानक्राफ्ट के जोनल मैनेजर दीपक सिंह ने कि कंपनी एक आईएसओ प्रमाणित निर्माता थोक आयातक और उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों की वितरक है । देशभर में 5000 से अधिक डीलरों एक विनिर्माण इकाई और 14 क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से किसानक्राफ्ट सीमांत किसानों की पैदावार बढ़ाने और उनकी आजीविका में सुधार के लिए कार्यरत है । महिला किसान गंगावती ने आधुनिक खेती से अपने जीवन में आए बदलाव को किसानों के बीच व्यक्त किया उन्होंने कहा परंपरागत खेती से आधुनिक खेती ज्यादा लाभकारी होती है । किसान क्रॉफ्ट लिमिटेड के असिस्टेंट मैनेजर आलोक जैन द्वारा उपस्थित किसानों व अतिथियों को आभार प्रकट किया गया इस मौके पर राजकुमार अशोक त्रिपाठी अनुज सिंह हरि नाम वर्मा संजय बाजपेई अनूप कुमार अभिषेक राय काली शंकर शुक्ला रामनारायण चौधरी आदि किसान मौजूद रहे ।

Published in: Hindustan epaper

epaper हिन्दुस्तान

# कम खर्चे में ज्यादा मुनाफा देती है आधुनिक खेती: डॉ सुमंत

25/10/2025

**अमावां, संवाददाता।** शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र दरियापुर में किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के लिए किसान क्रॉफ्ट लिमिटेड द्वारा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिले के विभिन्न गांव से आए किसानों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम में कृषि विशेषज्ञों व डॉक्टर सुमंत होल्ला ने उन्नत खेती के गुर सिखाए गए ।

डॉ. सुमंत होल्ला ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है । डीएसआर तकनीक (लाइन से सीधी बुवाई ) से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. केके सिंह ने कहा सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीली है और स्वाद में कोई अंतर नहीं आता। डॉ.संजीत सिन्हा ने कहा कि डीएसआर तकनीक से नर्सरी पोखरिंग समतलीकरण और रोपाई की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

इससे किसानों को श्रम बचता है।

कृषि विशेषज्ञ डॉ. राणा प्रताप सिंह ने कहा कि यूपी में डीएसआर खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह न केवल पानी की बचत करती है बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम योगदान देती है। इस मौके पर राजकुमार, अशोक त्रिपाठी, अनुज सिंह, हरि नाम वर्मा, संजय बाजपेई, अनूप कुमार, अभिषेक राय, काली शंकर शुक्ला, रामनारायण चौधरी आदि किसान मौजूद रहे।

Published in: Hindustan

हिन्दुस्त

# कम खर्चे में ज्यादा मुनाफा देती है आधुनिक खेती: डॉ सुमंत

**अमावां, संवाददाता।** शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र दरियापुर में किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के लिए किसान क्रॉफ्ट लिमिटेड द्वारा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम में जिले के विभिन्न गांव से आए किसानों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम में कृषि विशेषज्ञों व डॉक्टर सुमंत होल्ला ने उन्नत खेती के गुर सिखाए गए।

डॉ. सुमंत होल्ला ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है।डीएसआर तकनीक (लाइन से सीधी बुवाई ) से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. केके सिंह ने कहा सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीली है और स्वाद में कोई अंतर नहीं आता।डॉ.संजीत सिन्हा ने कहा कि डीएसआर तकनीक से नर्सरी पोखरिंग समतलीकरण और रोपाई की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

EVENT: 24-20-2025, Maihar
Published in: Dainik Samvad

# लुढ़ौती में किसानों के लिए धान की सूखी सीधी बुवाई वाले तकनीक का प्रदर्शन

दैनिक संवाद

मैहर। किसानों को नवीन तकनीकों से जोड़ते हुए किसानॠ ाफ्ट द्वारा ग्राम लुढ़ौती मैहर में सूखे सीधे बोए जाने वाले धान (डीएसआर) तकनीक का प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य किसानों को कम पानी, कम लागत और अधिक उत्पादन वाली आधुनिक कृषि तकनीक की जानकारी देना था। इस अवसर पर उपसिथत टाक हेड सुमन्त होल्ला,सेल्स मैनेजर सौरभ पाटिल, एग्रोनामिस्ट शिवाकांत सिंह , मैनेजर किशनजीत सिंह, स्टेट मैनेजर अरविंद पटेल जी ने बताया किस प्रकार से किसान ॠ ाफ्ट की मशीनो से कम से कम लागत में अधिक काम हो जाता हे । धान कटाई की मशीन कटर धान च**राजस्थान पत्रिका** ी एवं अन्य मशीनें उपलब्ध थी । विशेषज्ञों ने बताया कि डीएसआर विधि से धान की खेती में 30 प्रतिशत तक कम पानी की आवश्यकता होती है तथा मेहनत और लागत में भी उल्लेखनीय कमी आती है। पारंपरिक पद्धति में प्रति एकड़ करीब 5,000 लीटर पानी की जरूरत होती है, वहीं डीएसआर त क न ी क अपनाने पर यह घटकर 2,000-2,500 लीटर तक रह जाती है। इसके अलावा रोपाई क ी आवश्यकता नहीं पड़ने से बीज, श्रम और समय की भी बचत होती ह ै । क ृ षि विशेषज्ञों ने किसानों को बताया कि डीएसआर तकनीक मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने, खरपतवार नियंत्रण एवं कीट-रोगों में कमी लाने में सहायक है। इससे उत्पादन 50 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना रहती है। यही नहीं नर्सरी की आवश्यकता नहीं होती है,बीज की मात्रा में लगभग 10 किलो प्रति एकड़ की कमी के साथ मशीन के उपयोग में आसानी होती है।इस अवसर पर मौजूद अधिकारियों व तकनीकी टीम ने किसानों को धान की इस तकनीक के पर्यावरण अनुकूल होने के लाभ भी बताए गए क्योंकि इससे मीथेन उत्सर्जन कम होता है, जो जलवायु संरक्षण में मददगार है। कार्यॠ म में बड़ी संख्या में उपस्थित राजेन्द्र पटेल, दिनेश पटेल सहित कई किसानों के द्वारा धान एवं बुवाई संबंधित कई प्रशन पूंछे गए जिसका जवाब अधिकारियों के द्वारा जवाब देकर प्रश्नों को निराकरण किया गया। प्रदर्शनी में शामिल हुए और तकनीक को अपनाने में गहरी रुचि दिखाई। अंत में कंपनी के प्रतिनिधियों ने कहा कि किसानॠ ाफ्ट भविष्य में भी किसानों को आधुनिक कृषि तकनीक उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

Published in: Denik hari bhumi

# लुढ़ौती में किसानों के लिए धान की सूखी सीधी बुवाई तकनीक का प्रदर्शन

मैहर। किसानों को नवीन तकनीकों से जोड़ते हुए किसान क्राफ्ट द्वारा ग्राम लुढ़ौती, मैहर में सूखे सीधे बोए जाने वाले धान (डीएसआर) तकनीक का प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य किसानों को कम पानी, कम लागत और अधिक उत्पादन वाली आधुनिक कृषि तकनीक की जानकारी देना था। इस अवसर पर उपस्थित टाक हेड सुमन्त होल्ला, सेल्स मैनेजर सौरभ पाटिल, एग्रोनामिस्ट शिवाकांत सिंह, मैनेजर किशनजीत सिंह, स्टेट मैनेजर सहित विशेषज्ञों ने बताया कि डीएसआर विधि से धान की खेती में 30 प्रतिशत तक कम पानी की आवश्यकता होती है तथा मेहनत और लागत में भी उल्लेखनीय कमी आती है। पारंपरिक पद्धति में प्रति एकड़ करीब 5,000 लीटर पानी की जरूरत होती है, वहीं डीएसआर तकनीक अपनाने पर यह घटकर 2,000-2,500 लीटर तक रह जाती है। इसके अलावा रोपाई की आवश्यकता नहीं पड़ने से बीज, श्रम और समय की भी बचत होती है। कृषि विशेषज्ञों ने किसानों को बताया कि डीएसआर तकनीक मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने, खरपतवार नियंत्रण एवं कीट-रोगों में कमी लाने में सहायक है। इससे उत्पादन 50 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना रहती है। यही नहीं नर्सरी की आवश्यकता नहीं होती है, बीज की मात्रा में लगभग 10 किलो प्रति एकड़ की कमी के साथ मशीन के उपयोग में आसानी होती है। अधिकारियों व तकनीकी टीम ने किसानों को इस तकनीक के पर्यावरण अनुकूल होने के लाभ भी बताए, क्योंकि इससे मीथेन उत्सर्जन कम होता है, जो जलवायु संरक्षण में मददगार है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित राजेन्द्र पटेल, दिनेश पटेल सहित कई किसानों द्वारा धान एवं बुवाई संबंधित कई प्रश्न पूछे गए, जिसका जवाब अधिकारियों द्वारा जवाब देकर निराकरण किया गया। प्रदर्शनी में शामिल हुए किसानों ने तकनीक को अपनाने में गहरी रुचि दिखाई। अंत में कंपनी के प्रतिनिधियों ने कहा कि किसानक्राफ्ट भविष्य में भी किसानों को आधुनिक कृषि तकनीक उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

Published in: Denik samay vartaman

# लुढ़ौती में किसानों के लिए धान की सूखी सीधी बुवाई वाले तकनीक का प्रदर्शन

**मैहर संवाददाता रामकुमार रजक**

**मैहर।** किसानों को नवीन तकनीकों से जोड़ते हुए किसानक्राफ्ट द्वारा ग्राम लुढ़ौती मैहर में सूखे सीधे बोए जाने वाले धान (डीएसआर) तकनीक का प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य किसानों को कम पानी, कम लागत और अधिक उत्पादन वाली आधुनिक कृषि तकनीक की जानकारी देना था। इस अवसर पर उपसिथत टाक हेड सुमन्त होल्ला, सेल्स मैनेजर सौरभ पाटिल, एग्रोनामिस्ट शिवाकांत सिंह, मैनेजर किशनजीत सिंह, स्टेट मैनेजर सहित विशेषज्ञों ने बताया कि डीएसआर विधि से धान की खेती में 30 प्रतिशत तक कम पानी की आवश्यकता होती है तथा मेहनत और लागत में भी उल्लेखनीय कमी आती है। पारंपरिक पद्धति में प्रति एकड़ करीब 5,000 लीटर पानी की जरूरत होती है, वहीं डीएसआर तकनीक अपनाने पर यह घटकर 2,000-2,500 लीटर तक रह जाती है। इसके अलावा रोपाई की आवश्यकता नहीं पड़ने से बीज, श्रम और समय की भी बचत होती है। कृषि विशेषज्ञों ने किसानों को बताया कि डीएसआर तकनीक मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने, खरपतवार नियंत्रण एवं कीट-रोगों में कमी लाने में सहायक है। इससे उत्पादन 50 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना रहती है। यही नहीं नर्सरी की आवश्यकता नहीं होती है, बीज की मात्रा में लगभग 10 किलो प्रति एकड़ की कमी के साथ मशीन के उपयोग में आसानी होती है।

इस अवसर पर मौजूद अधिकारियों व तकनीकी टीम ने किसानों को धान की इस तकनीक के पर्यावरण अनुकूल होने के लाभ भी बताए गए क्योंकि इससे मीथेन उत्सर्जन कम होता है, जो जलवायु संरक्षण में मददगार है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित राजेन्द्र पटेल, दिनेश पटेल सहित कई किसानों के द्वारा धान एवं बुवाई संबंधित कई प्रशन पूंछे गए जिसका जवाब अधिकारियों के द्वारा जवाब देकर प्रश्नों को निराकरण किया गया। प्रदर्शनी में शामिल हुए और तकनीक को अपनाने में गहरी रुचि दिखाई। अंत में कंपनी के प्रतिनिधियों ने कहा कि किसानक्राफ्ट भविष्य में भी किसानों को आधुनिक कृषि तकनीक उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

Published in: Priyanshi vichardhara

# लुढ़ौती में किसानों के लिए धान की सूखी सीधी बुवाई वाले तकनीक का प्रदर्शन

**प्रियांशी विचार धारा ब्यूरो चीफ मैहर सत्य प्रकाश कुशवाहा**

मैहर। किसानों को नवीन तकनीकों से जोड़ते हुए किसानक्राफ्ट द्वारा ग्राम लुढ़ौती मैहर में सूखे सीधे बोए जाने वाले धान (डीएसआर) तकनीक का प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य किसानों को कम पानी, कम लागत और अधिक उत्पादन वाली आधुनिक कृषि तकनीक की जानकारी देना था। इस अवसर पर उपसिथत टाक हेड सुमन्त होल्ला,सेल्स मैनेजर सौरभ पाटिल, एग्रोनामिस्ट शिवाकांत सिंह , मैनेजर किशनजीत सिंह, स्टेट मैनेजर सहित विशेषज्ञों ने बताया कि डीएसआर विधि से धान की खेती में ३० प्रतिशत तक कम पानी की आवश्यकता होती है तथा मेहनत और लागत में भी उल्लेखनीय कमी आती है। पारंपरिक पद्धति में प्रति एकड़ करीब 5,००० लीटर पानी की जरूरत होती है, वहीं डीएसआर तकनीक अपनाने पर यह घटकर 2,०००-2,5०० लीटर तक रह जाती है। इसके अलावा रोपाई की आवश्यकता नहीं पड़ने से बीज, श्रम और समय की भी बचत होती है।कृषि विशेषज्ञों ने किसानों को बताया कि डीएसआर तकनीक मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने, खरपतवार नियंत्रण एवं कीट-रोगों में कमी लाने में सहायक है। इससे उत्पादन 5० प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना रहती है। यही नहीं नर्सरी की आवश्यकता नहीं होती है,बीज की मात्रा में लगभग 1० किलो प्रति एकड़ की कमी के साथ मशीन के उपयोग में आसानी होती है।

इस अवसर पर मौजूद अधिकारियों व तकनीकी टीम ने किसानों को धान की इस तकनीक के पर्यावरण अनुकूल होने के लाभ भी बताए गए क्योंकि इससे मीथेन उत्सर्जन कम होता है, जो जलवायु संरक्षण में मददगार है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित राजेन्द्र पटेल, दिनेश पटेल सहित कई किसानों के द्वारा धान एवं बुवाई संबंधित कई प्रशन पूंछे गए जिसका जवाब अधिकारियों के द्वारा जवाब देकर प्रश्नों को निराकरण किया गया। प्रदर्शनी में शामिल हुए और तकनीक को अपनाने में गहरी रुचि दिखाई। अंत में कंपनी के प्रतिनिधियों ने कहा कि किसानक्राफ्ट भविष्य में भी किसानों को आधुनिक कृषि तकनीक उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

Published in: Priyanshi Vishardhara

# किसानक्राफ्ट ने मैहर में किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान (डी डी एस आर) प्रौद्योगिकी प्रदर्शन आयोजित किया

सुनील कुमार डाहिया की रिपोर्ट

**मैहर** - किसानक्राफ्ट ने मैहर में किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान (डी डी एस आर) प्रौद्योगिकी प्रदर्शन आयोजित किया , इसका उद्देश्य किसानों को सूखे सीधे बीज वाले धान उगाने के फायदों के बारे में शिक्षित करना है-

24-10-2025: आईएसओ-प्रमाणित निर्माता, उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों के थोक आयातक और वितरक किसानक्राफ्ट ने Ludhoti, MÔihÔr, MÔdhy PrÔdesh में किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान पर एक प्रदर्शन आयोजित किया।

सूखे सीधे बीज वाले धान का लाभ यह है कि यह धान की खेती के लिए आवश्यक पानी की तुलना में 50% कम पानी का उपयोग करता है और उर्वरक, कीटनाशकों, श्रम लागत और ग्रीनहाउस गैस (मीथेन) उत्सर्जन की मात्रा को कम करता है। एक किलोग्राम पारंपरिक धान के उत्पादन के लिए 5,000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है, जबकि सूखे प्रत्यक्ष बीज वाले धान के लिए 2,000-2,500 लीटर के बीच की आवश्यकता होती है। यह फसल कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगाई जा सकती है।

सूखा प्रत्यक्ष बीजित धान सूखे खेतों में सूखा प्रत्यक्ष बीजारोपण है। खेतों में पोखर डालने की जरूरत नहीं है' फसल चक्रण संभव है। दालों, सब्जियों और तिलहनों के साथ सह-फसलन भी संभव है। लंबे समय में, इससे मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार होता है।

प्रदर्शन में बोलते हुए R&D हेड सुमन होल्ला ने कहा, धान की खेती और उत्पादन का भारत की अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान है। पानी की कमी और ज्ञान की कमी जैसी विभिन्न समस्याएं और मुद्दे इस फसल के उत्पादन पर गंभीर प्रभाव डाल सकते हैं, जो हमारी अर्थव्यवस्था के विकास पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। धान की फसल के खिलाफ बढ़ती समस्याओं से निपटने के लिए, हमने किसानक्राफ्ट में ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस की नई किस्में विकसित की हैं, जो समान उत्पादन के साथ 50% कम पानी की खपत करती हैं।

PD & Selse MÔ»»fÔger सौरभ पाटिल ने कहा, सूखे सीधे बीज वाले धान का उपयोग करके, किसान मिट्टी की उर्वरता के आधार पर अधिक उपज प्राप्त कर सकते हैं। पारंपरिक धान की किस्मों की तुलना में स्वाद में कोई बदलाव किए बिना, इस धान को सीधे बोया जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप धान की खेती की लाभप्रदता में वृद्धि होती है क्योंकि इससे खेती के खर्च में काफी कमी आती है।

एग्रोनॉमिस्ट शिवकान्त सिंह ने कहा, हसूखे सीधे बीज वाले धान की खेती का एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि इसमें नर्सरी, पोखरीकरण, समतलीकरण और रोपाई की आवश्यकता नहीं होती है। यह पर्यावरण के अनुकूल भी है क्योंकि यह लागत प्रभावी फसल होने के साथ-साथ कम मीथेन उत्सर्जन पैदा करती है क्योंकि यह कीटों और बीमारियों का कम प्रकोप देती है।"

PD MÔ»»fÔger किसनजीत सिन्हा ने कहा, "लो-मीथेन धान' के एक हिस्से के रूप में हम यूपी में डीएसआर खेती को बढ़ावा दे रहे हैं। यह तकनीक न केवल धान की खेती में पानी की आवश्यकता को कम करने में मदद करती है, बल्कि यह पर्यावरण के अनुकूल भी है क्योंकि इससे मीथेन उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी आती है

किसानक्राफ्ट के बारे में : StÔte MÔ»»fÔger अरविन्द पटेल

किसानक्राफ्ट एक आईएसओ-प्रमाणित निर्माता, थोक आयातक और उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों का वितरक है, जो छोटी भूमि वाले सीमांत किसानों की आय, फसल की पैदावार और खेती के क्षेत्रों को बढ़ाने में मदद करके उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित करता है। बहुत ही कम समय में, किसानक्राफ्ट देश भर में उपस्थिति के साथ इस सेगमेंट में सबसे प्रतिष्ठित और भरोसेमंद कंपनियों में से एक बन गई है। किसानक्राफ्ट का एक अखिल भारतीय वितरण नेटवर्क है जिसमें देश भर में 5000 से अधिक डीलर, 1 विनिर्माण इकाई और 14 क्षेत्रीय कार्यालय शामिल हैं।

Published in: Swadesh

स्वदेश

सतना - नव स्वदेश

25 Oct 2025

# लुढ़ौती में किसानों के लिए धान की सूखी सीधी बुवाई वाले तकनीक का प्रदर्शन

स्वदेश संवाददाता ■ मैहर

किसानों को नवीन तकनीकों से जोड़ते हुए किसानक्राफ्ट द्वारा ग्राम लुढ़ौती मैहर में सूखे सीधे बोए जाने वाले धान (डीएसआर) तकनीक का प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य किसानों को कम पानी, कम लागत और अधिक उत्पादन वाली आधुनिक कृषि तकनीक की जानकारी देना था। इस अवसर पर उपसिथत टाक हेड सुमन्त होल्ला,सेल्स मैनेजर सौरभ पाटिल, एग्रोनामिस्ट शिवाकांत सिंह , मैनेजर किशनजीत सिंह, स्टेट मैनेजर सहित विशेषज्ञों ने बताया कि डीएसआर विधि से धान की खेती में 30 प्रतिशत तक कम पानी की आवश्यकता होती है तथा मेहनत और लागत में भी उल्लेखनीय कमी आती है। पारंपरिक पद्धति में प्रति एकड़ करीब 5,000 लीटर पानी की जरूरत होती है, वहीं डीएसआर तकनीक अपनाने पर यह घटकर 2,000-2,500 लीटर तक रह जाती है। इसके अलावा रोपाई की आवश्यकता नहीं पड़ने से बीज, श्रम और समय की भी बचत होती है।कृषि विशेषज्ञों ने किसानों को बताया कि डीएसआर तकनीक मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने, खरपतवार नियंत्रण एवं कीट-रोगों में कमी लाने में सहायक है। इससे उत्पादन 50 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना रहती है। यही नहीं नर्सरी की आवश्यकता नहीं होती है,बीज की मात्रा में लगभग 10 किलो प्रति एकड़ की कमी के साथ मशीन के उपयोग में आसानी होती है।

Published in: Vipra express

# लुढ़ौती में किसानों के लिए धान की सूखी सीधी बुवाई वाले तकनीक का प्रदर्शन

विप्र एक्सप्रेस, मैहर। किसानों को नवीन तकनीकों से जोड़ते हुए किसानक्राफ्ट द्वारा ग्राम लुढ़ौती मैहर में सूखे सीधे बोए जाने वाले धान (डीएसआर) तकनीक का प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य किसानों को कम पानी, कम लागत और अधिक उत्पादन वाली आधुनिक कृषि तकनीक की जानकारी देना था। इस अवसर पर उपसिथत टाक हेड सुमन्त होता, सेल्स मैनेजर सौरभ पाटिल, एग्रोनामिस्ट शिवाकांत सिंह, मैनेजर किशनजीत सिंह, "स्टेट मैनेजर अरविंद पटेल जी" ने बताया किस प्रकार से किसान क्राफ्ट की मशीनो से कम से कम लागत में अधिक काम हो जाता है । धान कटाई की मशीन कटर धान चक्की एवं अन्य मशीनें उपलब्ध थी । विशेषज्ञों ने बताया कि डीएसआर विधि से धान की खेती में 30 प्रतिशत तक कम पानी की आवश्यकता होती है तथा मेहनत और लागत में भी उल्लेखनीय कमी आती है। पारंपरिक पद्धति में प्रति एकड़ करीब 5,000 लीटर पानी की जरूरत होती है, वहीं डीएसआर तकनीक अपनाने पर यह घटकर 2,000-2,500 लीटर तक रह जाती है। इसके अलावा रोपाई की आवश्यकता नहीं पड़ने से बीज, श्रम और समय की भी बचत होती है।कृषि विशेषज्ञों ने किसानों को बताया कि डीएसआर तकनीक मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने, खरपतवार नियंत्रण एवं कीट-रोगों में कमी लाने में सहायक है। इससे उत्पादन 50 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना रहती है। यही नहीं नर्सरी की आवश्यकता नहीं होती है,बीज की मात्रा में लगभग 10 किलो प्रति एकड़ की कमी के साथ मशीन के उपयोग में आसानी होती है।

इस अवसर पर मौजूद अधिकारियों व तकनीकी टीम ने किसानों को धान की इस तकनीक के पर्यावरण अनुकूल होने के लाभ भी बताए गए क्योंकि इससे मीथेन उत्सर्जन कम होता है, जो जलवायु संरक्षण में मददगार है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित राजेन्द्र पटेल, दिनेश पटेल सहित कई किसानों के द्वारा धान एवं बुवाई संबधित कई प्रशन पूछे गए जिसका जवाब अधिकारियों के द्वारा जवाब देकर प्रश्नों को निराकरण किया गया। प्रदर्शनी में शामिल हुए और तकनीक को अपनाने में गहरी रुचि दिखाई। अंत में कंपनी के प्रतिनिधियों ने कहा कि किसानक्राफ्ट भविष्य में भी किसानों को आधुनिक कृषि तकनीक उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

EVENT: 27-10-2025, Jaunpur
Published in: Aaj Akbar

# वैज्ञानिकों ने डीएसआर तकनीक से किसानों को किया जागरूक

**बक्शा।** विकास खण्ड के बबुरा गांव में प्रगतिशील किसान पूर्व प्रधान रामजस यादव के आवास पर सोमवार को किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की दिशा में किसानक्राफ्ट लिमिटेड ने सूखे सीधे बीज वाले धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस डीएसआर) पर एक तकनीकी प्रदर्शनी भी आयोजित किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को डीएसआर तकनीक के लाभों से परिचित कराना और धान की खेती में पानी की कम बचत व लागत में कमी के उपायों पर जागरूक करना था। इस दौरान वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं बक्शा कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डा. सुरेश कुमार कन्नौजिया ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है, लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है। डीएसआर तकनीक से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं।

किसानक्राफ्ट के आरएसडी हेड सीड्स डा. सुमंत होल्ला ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीली के साथ स्वाद में कोई अंतर नहीं आता। यह पर्यावरण के अनुकूल है क्योंकि इसमें मीथेन उत्सर्जन कम होता साथ ही साथ कीटों व बीमारियों का प्रकोप भी घटता है। वैज्ञानिक डा. राजीव सिंह ने कहा कि लो-मीथेन धान के एक हिस्से के रूप में यूपी में डीएसआर खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह न केवल पानी की बचत करती है बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम योगदान देती है। इस दौरान एडीओ एजी अनुराग सिंह, डा. रूपेश सिंह, त्रिभुवन सिंह, लालचंद यादव, रामजस यादव, रविन्द्र यादव, अशोक कुमार यादव, पंचकेश्वर सिंह, अरुण सिंह, प्रवीन सरोज, मुकेश शर्मा, दुर्गा मौर्या सहित सैकड़ों प्रगतिशील किसान मौजूद रहे।

# पुलिस ने चार वाहनों का किया चालान

**जौनपुर।** पुलिस अधीक्षक डा. कौस्तुभ के आदेश अनुसार पुलिस ने दो दिन लगातार चेकिंग अभियान चलाकर 62 वाहनों को चेक करने के साथ ही चार बाइकों का चालान कर दिया। बताया जाता है कि शहर थाना कोतवाली अंतर्गत भंडारी पुलिस चौकी प्रभारी संतोष कुमार सिंह ने साथी जवान हेड कांस्टेबल शमीम अहमद आदि जवानों को साथ लेकर क्षेत्र की राजा साहब पोखरा स्थित 62 वाहनों को चेक करते हुए बाइक पर तीन सवारी व मुख कागजातों में कमी रहने के कारण चार वाहनों का एमबी एक्ट में चालान करने के पश्चात दोबारा ऐसा न करने की हिदायत देकर वाहन स्वामियों को जाने दिया। हालांकि चेकिंग के दौरान शहर से राजा साहब पोखरे वाले वाले मार्ग से गुजरने वाले वाहन स्वामियों में हलचल जैसा माहौल देखने को मिला।

Published in: Amar Ujala

[redacted]

राहगीरों को परेशानी हो रही है। यह मार्ग बदलापुर पड़ाव को शहर से जोड़ता है। कई बार जिम्मेदार अधिकारियों से शिकायत की गई, लेकिन सुनवाई नहीं हुई। - **धर्मेंद्र दुबे, विकास यादव, कलीचाबाद**

**आप भी भेज सकते हैं अपने क्षेत्र की ऐसी किसी समस्या की जानकारी जो लोकहित से जुड़ी हो और सुनवाई नहीं हो रही हो।**

**ईमेल**

vns-dakincharge@vns.amarujala.com

**व्हाट्सएप : 9528027683**

छेड़खानी सहित मारपीट
किया गया है। किशोरी
रविवार शाम करीब 5 ब
के सामने बैठकर अके
गांव के ही मनबढ़ यु
ऊपर एक पत्थर का टुक
जब किशोरी युवक के
तो युवक गलत इशारे क
समय बाद किशोरी अप
गई थी। अकेले देखकर

# गोष्ठी में किसानों को पानी बचाने का तरीका बताया

**बक्शा।** स्थानीय विकास खंड के बबुरा गांव में प्रगतिशील किसान पूर्व प्रधान रामजस यादव के आवास पर सोमवार को किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें किसानों को आधुनिक तकनीक की जानकारी दी गई।

इस दौरान वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं बक्शा कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. सुरेश कुमार कन्नौजिया ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है।

डीएसआर तकनीक से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। किसान क्राफ्ट के आरएसडी हेड सीड्स डॉ. सुमंत होल्ला ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं।

किसान क्राफ्ट लिमिटेड के असिस्टेंट मैनेजर आलोक जैन ने कहा कि डीएसआर तकनीक से नर्सरी, समतलीकरण और रोपाई की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

वैज्ञानिक डॉ. राजीव सिंह ने कहा कि लो-मीथेन धान के एक हिस्से के रूप में यूपी में डीएसआर खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह न केवल पानी की बचत करती है बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम योगदान देती है। इस मौके पर एडीओ एजी अनुराग सिंह, डॉ. रूपेश सिंह, त्रिभुवन सिंह, रामजसमौजूद रहे। संवाद

## श्रीराम को गुरुकुल ले जाने का प्रसंग सुनाया

**सिकरारा।** क्षेत्र के खानापट्टी गांव स्थित रामलीला मैदान में आयोजित सात दिवसीय संगीतमय श्रीरामकथा के पांचवें दिन रविवार को कथा वाचक संतोष शरण महाराज ने महर्षि विश्वामित्र के राजा दशरथ के दरबार में आगमन और श्रीराम को गुरुकुल ले जाने का प्रसंग सुनाया। इस दौरान दिनेश सिंह सिंह ,सुशील सिंह, रजनीश सिंह, शरद सिंह मौजूद रहे। संवाद

## रामलीला मंच का विधायक ने किया उद्घाटन

**बदलापुर।** विधायक रमेश चंद्र मिश्र ने क्षेत्र के बेसहूपुर गांव में नवनिर्मित रामलीला मंच का रविवार की रात वैदिक मंत्रोच्चार के बीच फीता काटकर उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन हमारी संस्कृति के रक्षक हैं। यहां की रामलीला 40 वर्षों से चल रही है। बिना मंच के रामलीला मंचन करने में परेशानी हो रही थी। लोगों ने मंच निर्माण की मांग की थी। इसे देखते हुए रामलीला मंच का निर्माण कराया गया। इस अवसर पर मृगेंद्र सिंह शिव बाबा, दिव्यप्रकाश सिंह, शिवशंकर सिंह, विनय सिंह, घनश्याम तिवारी,

चोरी
**मीरगंज।**
शाम पक
प्रयागराज
अ
बैठे थे,
व्यक्ति
लिया औ
थाने ले
को कब्जे

22 ग्र
**बरसठी।**
के 22 ग्र
गया। बी
एवं सरव
विभिन्न
विकसित
उन्हों
भागीदारी
पहुंचे औ
सचिव,
मौजूद र
हरिप्रकाश
अन्य अ

पीड़ि
पीटा,
**चंदवक**
को गांव
मारपीट
अपनी बे
लेकर अ
पुलिस ने
लोगों
लिया है।
उसकी न
जा रही
युवक उ
करने ल
शिकायत

Published in: Dainik Jagaran

# वैज्ञानिकों ने डीएसआर तकनीक से किसानों को किया जागरूक

**बक्शा।** विकास खण्ड के बबुरा गांव में प्रगतिशील किसान पूर्व प्रधान रामजस यादव के आवास पर सोमवार को किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की दिशा में किसानक्राफ्ट लिमिटेड ने सूखे सीधे बीज वाले धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस डीएसआर) पर एक तकनीकी प्रदर्शनी भी आयोजित किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को डीएसआर तकनीक के लाभों से परिचित कराना और धान की खेती में पानी की कम बचत व लागत में कमी के उपायों पर जागरूक करना था। इस दौरान वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं बक्शा कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डा. सुरेश कुमार कन्नौजिया ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है, लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है। डीएसआर तकनीक से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं।

किसानक्राफ्ट के आरएसडी हेड सीड्स डा. सुमंत होल्ला ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीली के साथ स्वाद में कोई अंतर नहीं आता। यह पर्यावरण के अनुकूल है क्योंकि इसमें मीथेन उत्सर्जन कम होता साथ ही साथ कीटों व बीमारियों का प्रकोप भी घटता है। वैज्ञानिक डा. राजीव सिंह ने कहा कि लो-मीथेन धान के एक हिस्से के रूप में यूपी में डीएसआर खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह न केवल पानी की बचत करती है बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम योगदान देती है। इस दौरान एडीओ एजी अनुराग सिंह, डा. रूपेश सिंह, त्रिभुवन सिंह, लालचंद यादव, रामजस यादव, रविन्द्र यादव, अशोक कुमार यादव, पंचकेश्वर सिंह, अरुण सिंह, प्रवीन सरोज, मुकेश शर्मा, दुर्गा मौर्या सहित सैकड़ों प्रगतिशील किसान मौजूद रहे।

# पुलिस ने चार वाहनों का किया चालान

**जौनपुर।** पुलिस अधीक्षक डा. कौस्तुभ के आदेश अनुसार पुलिस ने दो दिन लगातार चेकिंग अभियान चलाकर 62 वाहनों को चेक करने के साथ ही चार बाइकों का चालान कर दिया। बताया जाता है कि शहर थाना कोतवाली अंतर्गत भंडारी पुलिस चौकी प्रभारी संतोष कुमार सिंह ने साथी जवान हेड कांस्टेबल शमीम अहमद आदि जवानों को साथ लेकर क्षेत्र की राजा साहब पोखरा स्थित 62 वाहनों को चेक करते हुए बाइक पर तीन सवारी व मुख कागजातों में कमी रहने के कारण चार वाहनों का एमबी एक्ट में चालान करने के पश्चात दोबारा ऐसा न करने की हिदायत देकर वाहन स्वामियों को जाने दिया। हालांकि चेकिंग के दौरान शहर से राजा साहब पोखरे वाले वाले मार्ग से गुजरने वाले वाहन स्वामियों में हलचल जैसा माहौल देखने को मिला।

Published in: Hindustan

■ रनवे पर हुआ चालक को अंदेशा, घटना के बाद टीम ने की जांच-पड़ताल

7:50 बजे शारजाह से आया। रात 8:50 बजे 102 यात्रियों को लेकर विमान उड़ान भरने की तैयारी में था।

खड़ा कर दिया गया। मौके पर पहुंची तकनीकी टीम की जांच में भी टायर पंक्चर दिखा। तकनीकी टीम की सलाह पर उड़ान को कैंसिल कर एयरक्राफ्ट ऑन ग्राउंड कर दिया गया। इस दौरान कुछ यात्रियों ने एयरलाइंस के प्रति नाराजगी जाहिर करते हुए हंगामा किया।

# कम पानी में धान उगाने के टिप्स किसानों को दिए गए

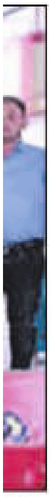

**नौपेड़वा, हिन्दुस्तान संवाद।** बक्शा ब्लाक के बबुरा गांव में प्रगतिशील किसान एवं पूर्व प्रधान रामजस यादव के आवास पर सोमवार को किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की दिशा में किसानक्राफ्ट लिमिटेड ने सूखे सीधे बीज वाले धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस डीएसआर) पर एक तकनीकी प्रदर्शनी भी लगाई।

■ बक्शा के बबुरा गांव में किसान रामजस यादव के आवास पर गोष्ठी

गोष्ठी का मुख्य उद्देश्य किसानों को डीएसआर तकनीक के लाभ से परिचित कराना और धान की खेती में कम पानी और लागत में कमी के उपायों पर जागरूक करना था। वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं बक्शा कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. सुरेश कुमार कन्नौजिया ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है। घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है। डीएसआर तकनीक से किसान सामान्य उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। किसान क्राफ्ट के आरएसडी हेड सीड्स डॉ. सुमंत होल्ला, किसानक्राफ्ट लिमिटेड के असिस्टेंट मैनेजर आलोक जैन, वैज्ञानिक डॉ. राजीव सिंह रहे।

# योजनाओं की जानकारी

■ बदलापुर विधायक और डीएम ने अधिकारियों के

Published in: Janvaarta

वाराणसी, मंगलवार, 28 अक्टूबर, 2025

# बबुरा गांव में आयोजित हुई किसान गोष्ठी

## किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की दिशा में हुई पहल

जौनपुर। बक्सा विकास खण्ड के बबुरा गांव में प्रगतिशील किसान पूर्व प्रधान रामजस यादव के आवास पर सोमवार को किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की दिशा में किसानक्राफ्ट लिमिटेड ने सूखे सीधे बीज वाले धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस डीएसआर) पर एक तकनीकी प्रदर्शनी भी आयोजित किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को डीएसआर तकनीक के लाभों से परिचित कराना और धान की खेती में पानी की कम बचत व लागत में कमी के उपायों पर जागरूक करना था। इस दौरान वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं बक्सा कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. सुरेश कुमार कन्नौजिया ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है, लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है। डीएसआर तकनीक से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं किसानक्राफ्ट के आरएसडी हेड सीड्स डॉ. सुमंत होल्ला ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीली के साथ स्वाद में कोई अंतर नहीं आता किसानक्राफ्ट लिमिटेड के असिस्टेंट मैनेजर आलोक जैन ने कहा कि डीएसआर तकनीक से नर्सरी, पोखरिंग, समतलीकरण और रोपाई की आवश्यकता समाप्त हो जाती है, जिससे श्रम लागत में भारी कमी आती है। यह पर्यावरण के अनुकूल है क्योंकि इसमें मीथेन उत्सर्जन कम होता साथ ही साथ कीटों व बीमारियों का प्रकोप भी घटता है। वैज्ञानिक डॉ. राजीव सिंह ने कहा कि लो-मीथेन धान के एक हिस्से के रूप में यूपी में डीएसआर खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह न केवल पानी की बचत करती है बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम योगदान देती है किसानक्राफ्ट के सेल्स मैनेजर रमेश विश्वकर्मा ने बताया कि कंपनी एक आईएसओ प्रमाणित निमार्ता एवं थोक आयातक और उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों का वितरक है। देशभर में 5000 से अधिक डीलरों, एक विनिर्माण इकाई और 14 क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से किसानक्राफ्ट सीमांत किसानों की पैदावार बढ़ाने और उनकी आजीविका में सुधार के लिए कार्यरत है इस मौके पर बड़ी संख्या में किसानो को डीएसआर तकनीक के व्यावहारिक लाभों को प्रत्यक्ष रूप से दिखाया गया। इस दौरान एडीओ एजी अनुराग सिंह, डॉ. रूपेश सिंह, त्रिभुवन सिंह, लालचंद यादव, रामजस यादव, रविन्द्र यादव, अशोक कुमार यादव, पंचकेश्वर सिंह, अरुण सिंह, प्रवीन सरोज, मुकेश शर्मा, दुर्गा मौर्या सहित सैकड़ों प्रगतिशील किसान मौजूद रहें।

Published in: Preet Times

## बबुरा गांव में आयोजित हुआ किसान गोष्ठी

प्रीत टाइम्स ब्यूरोचीफ : जनार्दन गौड़

जौनपुर। बक्शा विकास खण्ड के बबुरा गांव में प्रगतिशील किसान पूर्व प्रधान रामजस यादव के आवास पर सोमवार को किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की दिशा में किसानक्राफ्ट लिमिटेड ने सूखे सीधे बीज वाले धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस डीएसआर) पर एक तकनीकी प्रदर्शनी भी आयोजित किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को डीएसआर तकनीक के लाभों से परिचित कराना और धान की खेती में पानी की कम बचत व लागत में कमी के उपायों पर जागरूक करना था। इस दौरान वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं बक्शा कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. सुरेश कुमार कन्नौजिया ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है, लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है। डीएसआर तकनीक से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। किसानक्राफ्ट के सेल्स मैनेजर रत्नेश विश्वकर्मा ने बताया कि कंपनी एक आईएसओ प्रमाणित निर्माता एवं थोक आयातक और उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों का वितरक है। देशभर में 5000 से अधिक डीलरों, एक विनिर्माण इकाई और 14 क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से किसानक्राफ्ट सीमांत किसानों की पैदावार बढ़ाने और उनकी आजीविका में सुधार के लिए कार्यरत है। इस मौके पर बड़ी संख्या में किसानो को डीएसआर तकनीक के व्यावहारिक लाभों को प्रत्यक्ष रूप से दिखाया गया। इस दौरान एडीओ एजी अनुराग सिंह, डॉ. रूपेश सिंह, त्रिभुवन सिंह, लालचंद यादव, रामजस यादव, रविन्द्र यादव, अशोक कुमार यादव, पंचकेश्वर सिंह, अरुण सिंह, प्रवीन सरोज, मुकेश शर्मा, दुर्गा मौर्या सहित सैकड़ों प्रगतिशील किसान मौजूद रहें।

## थाने के निकट मिली अधेड व्यक्ति की लाश

## अस्त

प्रीत टाइम्स ब्

जौनपुर। सो
सायंकाल अस्ताचल
को छठ के अवस
गंगा गोमती के घाट
का सैलाब उमड़ प
की संख्या में श्रद्ध
बाद से ही गाजे ब
पहुंचना शुरू कर
सायंकाल नदी के
होकर श्रद्धा के साथ
शहर के गोपी घा
घाट, हनमान घाट,
पर मेला जैसा म
सूप में गन्ना, फल
के साथ पूजन की
महिलाएं पूजा के
पूजा स्थल पर भा
देखते हुए पुलिस
सुरक्षाबलों की व्यवस
थी। बेदिकाओं का

## बदला

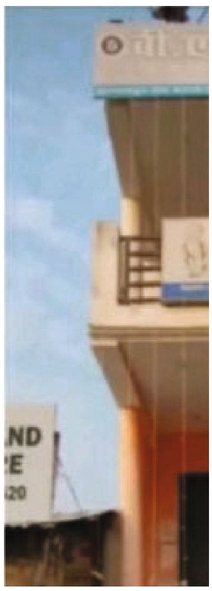

Published in: Tejas today

## ी लहर, घाटों पर उमड़ा जनसैलाब

ो अर्घ्य देकर मांगा सुख-समृद्धि का आशीर्वाद

## डूबते सूर्य को व्रती महिलाओं ने दिया अर्घ्य, गंगा आरती ने बांधा समां

अतुल्य वेलफेयर ट्रस्ट एवं गुलाबी समिति की किन्नरों ने भी दिया अर्घ्य

छठ

पोखरे पर उमड़ा पड़ा व्रती महिलाओं का सैलाब

## ेशन में वांछितों यी कार्यवाही

## वैज्ञानिकों ने डीएसआर तकनीक से किसानों को किया जागरूक

टिप्स

कम पानी में धान की फसल व उर्वराशक्ति बढ़ाने के दिये टिप्स

## ारिषद शौर्य ने की 'भारत को जानो प्रतियोगिता'

सीखता है : एसपी सिटी

-'भारत को जानो' नामक पुस्तक ज्ञानवर्धन संकलन : बीएसए

## , बदली जाई दुनिया: संत पंकज

ाज जी का हुआ भव्य स्वागत

समाचार पत्र विक्रेता पवन साहू को मातृशोक

भजन संध्या में भक्ति भाव से विभोर हुये श्रद्धालुगण

# EVENT: 27-10-2025, Karjat
# Published in: Dainik janmat

ePaper
नवराष्ट्र Raigad | 29 October 2025 | Page 3

**शेतीवाडी** | शेतकऱ्यांसाठी कोरड्या थेट पेरणीच्या भातावरील प्रदर्शनाचे आयोजन

## शेतकऱ्यांसाठी ड्राय डायरेक्ट पेरणी तंत्रज्ञान

कर्जत, (वा.) किसान क्राफ्टने महाराष्ट्र यांनी कर्जत येथे शेतकऱ्यांसाठी ड्राय डायरेक्ट पेरणी भात (डीडीएसआर) तंत्रज्ञान प्रात्यक्षिकाचे आयोजन करण्यात आले होते. किसान क्राफ्टने या आयएसओ प्रमाणित उत्पादक, घाऊक आयातदार आणि उच्च दर्जाच्या कृषी उपकरणाचे वितरण यांनी महाराष्ट्रातील कर्जत येथे शेतकऱ्यांसाठी कोरड्या थेट पेरणीच्या भातावरील प्रदर्शनाचे आयोजन करण्यात आले होते. किसान क्राफ्ट ही एक आयएसओ प्रमाणित उत्पादक गहू कायद्यावर आणि उच्च गुणवत्तेवर कृषी उपकरणांचा वितरक आहे, जी अल्पभूधारक असलेल्या शेतकऱ्यांचे उत्पन्न पीक उत्पन्न आणि लागवडी क्षेत्र वाढविण्यास मदत करून त्यांचे जीवनमान सुधारण्यास लक्ष केंद्रित करते. अगदी अल्पावधीत किसान क्राफ्ट देशव्यापी सर्वात प्रतिष्ठित आणि विश्वासार्ह कंपन्यांपैकी एक बनली आहे. किसान क्राफ्टचे संपूर्ण भारतात वितरण नेटवर्क आहे, ज्यात देशभरातील ५००० हून अधिक डीलर्स एक उत्पादन युनिट आणि १४ प्रादेशिक कार्यालय आहेत.

### कोरडवाहू शेती प्रशिक्षण

किसान क्राफ्ट यांच्याकडून कर्जत तालुक्यातील कोरडवाहू शेतकऱ्यांसाठी शेती प्रशिक्षण आयोजित केले होते. शेतीनिष्ठ शेतकरी विनय वेखंडे यांच्याकडे हे प्रशिक्षण शिबीर आयोजित केले होते. तसेच भात लागवड आणि उत्पादन हे भारताच्या अर्थव्यवस्थेत मोठे योगदान आहे. पाणीटंचाई आणि ज्ञानाचा अभाव यासारख्या विविध समस्यांचा या पिकाच्या उत्पादनावर गंभीर परिणाम होऊ शकतो. ज्याचा आपल्या अर्थव्यवस्थेच्या विकासावर नकारात्मक परिणाम होऊ शकतो.

### हे आहेत फायदे

- कोरड्या सरळ बियाणे असलेल्या भाताचा फायदा असा आहे की ते भात लागवडीसाठी आवश्यक असलेल्या पाण्यापेक्षा ५०% कमी पाणी वापरते.
- खते कीटकनाशके मजुरी खर्च आणि हरितगृह वायू (मिथेन) उत्सर्जन कमी करते.
- एक किलो पारंपारिक भाताच्या उत्पादनासाठी ५ हजार लिटर पाणी लागतं तर कोरड्या थेट बियाणं असलेल्या धनाला २००० ते २५०० लिटर पाणी लागतं.
- कमी पर्जन्यमान असलेल्या ठिकाणी हे पीक घेता येते, याबद्दल प्रात्यक्षिक दाखवले.
- कोरड्या थेट बियाणे असलेल्या भाताचे कोरड्या शेतात कोरडे थेट बियाणे आहे.

### उत्तर प्रदेशात जीएसआर लागवडीला प्रोत्साहन

- लोमिकल भारताचा एक भाग म्हणून उत्तर प्रदेशात जीएसआर लागवडीला प्रोत्साहन देत आहेत. या तंत्रज्ञानासाठी केवल भात लागवडीमध्ये पाण्याची ही आवश्यकता केवळ कचरा कमी करण्यास मदत करत नाही तर ती पर्यावरणास अनुकूल देखील आहे.
- यावेळी किसान क्राफ्टचे सौरभ पाटील, स्मित कदम, बसवराज, यादव यांनी शेतकऱ्यांना मार्गदर्शन केले. तसेच शेतकरी विनय वेखंडे, जगदीश पाटील, परम पाटील, चंद्रकांत जाधव, भगवान चव्हाण, कृष्णा चव्हाण, विजय, बळीराम मांडावले, अनिल देशमुख, भरत जाधव आदी उपस्थित होते.

### थेट बियांच्या तांदळाची नवीन जात विकसित

भाताच्या पिकाच्या वाढत्या समस्यांवर कोरड्या थेट बियांच्या तांदळाची नवीन जाती विकसित केली आहे. जी समान उत्पादनासह ५० टक्के कमी पाणी वापरतात. सुक्या सरलवानाचा वापर करून शेतकऱ्यांना जमिनीच्या सुपीकतेनुसार उत्पादन जास्त मिळू शकते.

Click here to watch video

Published in: Krushival

# कर्जत येथे पेरणी भात तंत्रज्ञानाचे प्रात्यक्षिक

## किसान क्राफ्टनेकडून कार्यक्रमाचे आयोजन

। नेरळ । प्रतिनिधी ।

किसान क्राफ्टने महाराष्ट्र यांनी कर्जत येथे शेतकऱ्यांसाठी ड्राय डायरेक्ट पेरणी भात (डीडीएसआर) तंत्रज्ञान प्रात्यक्षिकाचे आयोजन करण्यात आले होते. किसान क्राफ्टने या आयएसओ प्रमाणित उत्पादक, घाऊक आयातदार आणि उच्च दर्जाच्या कृषी उपकरणाचे वितरण यांनी महाराष्ट्रातील कर्जत येथे शेतकऱ्यांसाठी कोरड्या थेट पेरणीच्या भातावरील प्रदर्शनाचे आयोजन करण्यात आले होते.

किसान क्राफ्ट ही एक आयएसओ प्रमाणित उत्पादक गहू कायद्यावर आणि उच्च गुणवत्तेवर कृषी उपकरणांचा वितरक आहे जी अल्पभूधारक असलेल्या शेतकऱ्यांचे उत्पन्न पीक उत्पन्न आणि लागवडी क्षेत्र वाढविण्यास मदत करून त्यांचे जीवनमान सुधारण्यास लक्ष केंद्रित करते. अगदी अल्पावधीत किसान क्राफ्ट देशव्यापी सर्वात प्रतिष्ठित आणि विश्वासार्ह कंपन्यांपैकी एक बनली आहे. किसान क्राफ्टचे संपूर्ण भारतात वितरण नेटवर्क आहे, ज्यात देशभरातील ५००० हून अधिक डीलर्स एक उत्पादन युनिट आणि १४ प्रादेशिक कार्यालय आहेत. किसान क्राफ्ट यांच्याकडून कर्जत तालुक्यातील कोरडवाहू शेतकरी यांच्यासाठी शेती प्रशिक्षण आयोजित केले होते. शेतीनिष्ठ शेतकरी विनय वेखंडे यांच्याकडे हे प्रशिक्षण शिबीर आयोजित केले होते. त्यावेळी किसान क्राफ्टचे सौरभ पाटील, स्मित कदम, बसवराज यादव यांनी शेतकऱ्यांना मार्गदर्शन केले. तसेच शेतकरी विनय वेखंडे, जगदीश पाटील, परम पाटील, चंद्रकांत जाधव, भगवान चव्हाण, कृष्णा चव्हाण, विजय, बळीराम मांडावले, अनिल देशमुख, भरत जाधव आदी उपस्थित होते.

भाताच्या पिकाच्या वाढत्या समस्यांवर मात करण्यासाठी किसान क्राफ्ट ने कोरड्या थेट बियांच्या तांदळाची नवीन जाती विकसित केली आहे. जी समान उत्पादनासह ५० टक्के कमी पाणी वापरतात. सुक्या सरलवानाचा वापर करून शेतकऱ्यांना जमिनीच्या सुपीकतेनुसार उत्पादन जास्त मिळू शकते. लोमिकल भारताचा एक भाग म्हणून आम्ही उत्तर प्रदेशात जीएसआर लागवडीला प्रोत्साहन देत आहोत, असे यावेळी मार्गदर्शनात सांगण्यात आले.

Published in: Navarashtra epaper

# कर्जत येथे शेतकऱ्यांसाठी ड्राय डायरेक्ट पेरणी भात तंत्रज्ञानाचे प्रात्यक्षिक

## किसान क्राफ्टने महाराष्ट्र यांनी शेतकऱ्यांसाठी डायरेक्ट पेरणी भात तंत्रज्ञानाचे प्रात्यक्षिकाचे केले आयोजन

**कर्जत** : किसान क्राफ्टने महाराष्ट्र यांनी कर्जत येथे शेतकऱ्यांसाठी ड्राय डायरेक्ट पेरणी भात (डी डी एस आर) तंत्रज्ञान प्रात्यक्षिकाचे आयोजन करण्यात आले होते. किसानक्राफ्टने या आयएसओ प्रमाणित उत्पादक, धाऊक आयातदार आणि उच्च दर्जाच्या कृषी उपकरणाचे वितरण यांनी महाराष्ट्रातील कर्जत येथे शेतकऱ्यांसाठी कोरड्या थेट पेरणीच्या भातावरील प्रदर्शनाचे आयोजन करण्यात आले होते.

किसान क्राफ्ट ही एक आयएसओ प्रमाणित उत्पादक गहू कायद्यावर आणि उच्च गुणवत्तेवर कृषी उपकरणांचा वितरक आहे जी अल्पभूधारक असलेल्या शेतकऱ्यांचे उत्पन्न पीक उत्पन्न आणि लागवडी क्षेत्र वाढविण्यास मदत करून त्यांचे जीवनमान सुधारण्यास लक्ष केंद्रित करते अगदी अल्पावधीत किसान क्राफ्ट देशव्यापी सर्वात प्रतिष्ठित आणि विश्वासार्ह कंपन्यापैकी एक बनली आहे. किसान क्राफ्टचे संपूर्ण भारतात वितरण नेटवर्क आहे ज्यात देशभरातील ५००० हून अधिक डीलर्स एक उत्पादन युनिट आणि १४ प्रादेशिक कार्यालय आहेत. किसान क्राफ्ट यांच्याकडून कर्जत तालुक्यातील कोरडवाहू शेतकरी यांच्यासाठी शैती प्रशिक्षण आयोजित केले होते.शेतीनिष्ठ शेतकरी विनय वेखंडे यांच्याकडे हे प्रशिक्षण शिबीर आयोजित केले होते.त्यावेळी किसान क्राफ्ट चे सौरभ पाटील,स्मित कदम,बासवराज,यादव यांनी शेतकऱ्यांना मार्गदर्शन केले. तसेच शेतकरी विनय वेखंडे, जगदीश पाटील, परम पाटील, चंद्रकांत जाधव, भगवान चव्हाण, कृष्णा चव्हाण, विजय, बळीराम मांडावले, अनिल देशमुख, भरत जाधव आदी उपस्थित होते.

कोरड्या सरळ बियाणे असलेल्या भाताचा फायदा असा आहे की ते भात लागवडीसाठी आवश्यक असलेल्या पाण्यापेक्षा ५०इ कमी पाणी वापरते आणि खाते कीटकनाशके मजुरी खर्च आणि हरितगृह वायू (मिथेन) उत्सर्जन कमी करते. एक किलो पारंपारिक भाताच्या उत्पादनासाठी ५ हजार लिटर पाणी लागतं तर कोरड्या थेट बियाणं असलेल्या धनाला २००० ते २५०० लिटर पाणी लागतं. कमी पर्जन्यमान असलेल्या ठिकाणी हे पीक घेता येते याबद्दल प्रात्यक्षिक दाखवले.कोरड्या थेट बियाणे असलेल्या भाताचे कोरड्या शेतात कोरडे थेट बियाणे आहे शेतात खड्डे टाकण्याची गरज नाही पिकांची फेरपालट शक्यता आहे. तसेच भात लागवड आणि उत्पादन हे भारताच्या अर्थव्यवस्थेत मोठे योगदान आहे. पाणीटंचाई आणि ज्ञानाचा अभाव यासारख्या विविध समस्यांचा या पिकाच्या उत्पादनावर गंभीर परिणाम होऊ शकतो. ज्याचा आपल्या अर्थव्यवस्थेच्या विकासावर नकारात्मक परिणाम होऊ शकतो. भाताच्या पिकाच्या वाढत्या समस्यांवर मात करण्यासाठी किसान क्राफ्ट ने कोरड्या थेट बियांच्या तांदळाची नवीन जाती विकसित केली आहे. जी समान उत्पादनासह ५० टक्के कमी पाणी वापरतात. सुक्या सरलवानाचा वापर करून शेतकऱ्यांना जमिनीच्या सुपीकतेनुसार उत्पादन जास्त मिळू शकते.लोमिकल भारताचा एक भाग म्हणून आम्ही उत्तर प्रदेशात जीएसआर लागवडीला प्रोत्साहन देत आहोत या तंत्रज्ञानासाठी केवल भात लागवडीमध्ये पाण्याची ही आवश्यकता केवल कचरा कमी करण्यास मदत करत नाही तर ती पर्यावरणास अनुकूल देखील आहे.

## प्रतिष्ठीत व्यापारी रामरतन
## घरच्या श्रीकृष्णाला पंच्चाहत्तर

कल्याण : कल्याणच्या

Published in: Punya nagri

पुण्य नगरी

# शेतकऱ्यांसाठी कोरड्या थेट पेरणी भात तंत्रज्ञानाचे प्रात्यक्षिक

## कर्जत येथे किसान क्राफ्टचा उपक्रम

**कर्जत** : किसान क्राफ्ट, महाराष्ट्र यांच्यामार्फत कर्जत येथे शेतकऱ्यांसाठी ड्राय डायरेक्ट पेरणी भात (डीडीएसआर) तंत्रज्ञान प्रात्यक्षिकाचे नुकतेच कर्जत येथे आयोजन करण्यात आले. यावेळी शेतकऱ्यांसाठी कोरड्या थेट पेरणीच्या भातावरील प्रदर्शनाचेही आयोजन करण्यात आले.

किसान क्राफ्ट ही एक आयएसओ प्रमाणित कृषी उपकरणांची वितरक असून अल्प भूधारक असलेल्या शेतकऱ्यांचे पीक उत्पन्न आणि लागवड क्षेत्र वाढवण्यावर लक्ष केंद्रित करते. किसान क्राफ्ट यांच्याकडून कोरडवाहू शेतकऱ्यांसाठी शेती प्रशिक्षण आयोजित केले होते. शेतीनिष्ठ शेतकरी विनय वेखंडे यांच्याकडे हे प्रशिक्षण शिबीर आयोजित करण्यात आले. यावेळी किसान क्राफ्टचे सौरभ पाटील, स्मित कदम, बसवराज यादव यांनी शेतकऱ्यांना मार्गदर्शन केले. तसेच शेतकरी विनय वेखंडे, जगदीश पाटील, परम पाटील, चंद्रकांत जाधव, भगवान चव्हाण, कृष्णा चव्हाण, अनिल देशमुख, भरत जाधव आदी उपस्थित होते.

कोरड्या सरळ बियाणे भाताबाबत सविस्तर माहिती यावेळी देण्यात आली. कोरड्या सरळ बियाणे असलेल्या भाताचा फायदा असा आहे की, ते भात लागवडीसाठी आवश्यक असलेल्या पाण्यापेक्षा ५० टक्के कमी पाणी वापरते आणि खते कीटकनाशके मजुरी खर्च आणि हरितगृह वायू (मिथेन) उत्सर्जन कमी करते. एक किलो पारंपरिक भाताच्या उत्पादनासाठी ५ हजार लिटर पाणी लागते, तर कोरड्या थेट बियाणे असलेल्या धानाला २००० ते २५०० लिटर पाणी लागते.

EVENT: 29-10-2025, Gorakhpur, UP

Published in: Amar Ujala

# किसान क्राफ्ट ने डीडीएसआर तकनीक का किया प्रदर्शन

## पारंपरिक धान की खेती की तुलना में 50% कम पानी का होगा उपयोग

संवाद न्यूज एजेंसी

डीडीएसआर तकनीक के प्रदर्शन के दौरान उपस्थित किसान व अन्य। संवाद

**जंगल कौड़िया।** आईएसओ प्रमाणित कृषि उपकरण निर्माता किसान क्राफ्ट ने महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) में किसानों के लिए सूखे सीधी बुवाई धान (डीडीएसआर) प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया। इसका उद्देश्य किसानों को इस तकनीक के लाभों से अवगत कराना रहा। जो पारंपरिक धान की खेती की तुलना में 50% कम पानी उपयोग करती है।

प्रदर्शन में बताया गया कि एक किलोग्राम पारंपरिक धान के लिए 5,000 लीटर पानी लगता है, जबकि डीडीएसआर में मात्र 2,000-2,500 लीटर। यह उर्वरक, कीटनाशक, श्रम लागत और मीथेन उत्सर्जन को कम करता है। सूखे खेतों में सीधे बीजारोपण संभव है। फसल चक्रण, दालों-सब्जियों के साथ सह फसल और मिट्टी स्वास्थ्य सुधार जैसे फायदे हैं।

केवीके प्रमुख डॉ आरके सिंह ने कहा कि पानी की कमी से धान उत्पादन प्रभावित होता है। हमारी नई किस्में समान उपज के साथ 50% कम पानी खपत करती हैं। आईआरआरआई वैज्ञानिक डॉ. अजय पुंडीर ने बताया कि यह मिट्टी उर्वरता पर अधिक उपज देती है, स्वाद बरकरार रखते हुए लागत घटाती है। इस मौके पर आलोक जैन, डॉ. श्वेता सिंह, रविकांत सिंह, डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय, डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव तथा जितेंद्र सिंह सहित 80 से अधिक किसान उपस्थित रहे।

Published in: Avadh Nagari

कैंपस प्रशिक्षण आयोजित किया गोबर की खाद या कंपोस्ट खाद. गया ।

# किसान क्राफ्ट ने उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान डी डी एस आर प्रौद्योगिकी प्रदर्शन आयोजित किया

अवध नगरी संवाददाता
मरोहिया

गोरखपुर। इसका उद्देश्य किसानों को सूखे सीधे बीज वाले धान उगाने के फायदों के बारे में शिक्षित करना है– 29 / 10 / 2025 आईएसओ –प्रमाणित निर्माता,उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों के थोक आयातक और वितरक किसानक्राफ्ट ने **Mahayogi Gorakhnath KVK] Uttar Pradesh** में किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान पर एक प्रदर्शन आयोजित किया। सूखे सीधे बीज वाले धान का लाभ यह है कि यह धान की खेती के लिए आवश्यक पानी की तुलना मे 50: कम पानी का उपयोग करता है और उर्वरक,कीटनाशकों,श्रम लागत और ग्रीनहाउस गैस (मीथेन) उत्सर्जन की मात्रा को कम करता है। एक किलोग्राम पारंपरिक धान के उत्पादन के लिए 5,000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है,जबकि सूखे प्रत्यक्ष बीज वाले धान के लिए 2,000–2,500 लीटर के बीच की आवश्यकता होती है। यह फसल कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगाई जा सकती है। सूखा प्रत्यक्ष बीजित धान सूखे खेतों में सूखा प्रत्यक्ष बीजारोपण है। खेतों में पोखर डालने की जरूरत नहीं है या फसल चक्रण संभव है। दालों, सब्जियों और तिलहनों के साथ सहफसलन भी संभव है। लंबे समय में,इससे मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार होता है। प्रदर्शन में बोलते हुए झटझ प्रमुख ट झ पदही ने कहा,"धान की खेती और उत्पादन का भारत की अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान है।पानी की कमी और ज्ञान की कमी जैसी विभिन्न समस्याएं और मुद्दे इस फसल के उत्पादन पर गंभीर प्रभाव डाल सकते हैं,जो हमारी अर्थव्यवस्था के विकास पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। धान की फसल के खिलाफ बढ़ती समस्याओं से निपटने के लिए,हमने किसानक्राफ्ट में ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस की नई किस्में विकसित की हैं,जो समान उत्पादन के साथ 50: कम पानी की खपत करती हैं।

प्त्त् से वैज्ञानिक डॉ अजय पुण्डीर ने कहा,"सूखे सीधे बीज वाले धान का उपयोग करके,किसान मिट्टी की उर्वरता के आधार पर अधिक उपज प्राप्त कर सकते हैं। पारंपरिक धान की किस्मों की तुलना में स्वाद में कोई बदलाव किए बिना,इस धान को सीधे बोया जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप धान की खेती की लाभप्रदता में वृद्धि होती है क्योंकि इससे खेती के खर्च में काफी कमी आती है।

किसान क्राफ्ट के असिस्टेंट मैनेजर आलोक जैन ने कहा ,"सूखे सीधे बीज वाले धान की खेती का एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि इसमें नर्सरी,पोखरिंग,समतलीकरण और रोपाई की आवश्यकता नहीं होती है। यह पर्यावरण के अनुकूल भी है क्योंकि यह लागत प्रभावी फसल होने के साथ–साथ कम मीथेन उत्सर्जन पैदा करती है क्योंकि यह कीटों और बीमारियों का कम प्रकोप देती है।श

कृषि वैज्ञानिक डॉ श्वेता सिंह ने कहा,श्लो–मीथेन धानश के एक हिस्से के रूप में हम यूपी में डीएसआर खेती को बढ़ावा दे रहे हैं। यह तकनीक न केवल धान की खेती में पानी की आवश्यकता को कम करने में मदद करती है,बल्कि यह पर्यावरण के अनुकूल भी है क्योंकि इससे मीथेन उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी आती है।

किसानक्राफ्ट के बारे में किसान क्राफ्ट के सेल्स मैनेजर रविकान्त सिंह ने कहा किसानक्राफ्ट एक आईएसओ–प्रमाणित निर्माता,थोक आयातक और उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों का वितरक है,जो छोटी भूमि वाले सीमांत किसानों की आय,फसल की पैदावार और खेती के क्षेत्रों को बढ़ाने में मदद करके उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित करता है। बहुत ही कम समय में,किसानक्राफ्ट देश भर में उपस्थिति के साथ इस सेगमेंट में सबसे प्रतिष्ठित और भरोसेमंद कंपनियों में से एक बन गई है। किसानक्राफ्ट का एक अखिल भारतीय वितरण नेटवर्क है जिसमें देश भर में 5000 से अधिक डीलर,1 विनिर्माण इकाई और 14 क्षेत्रीय कार्यालय शामिल हैं।"

Published in: Hindustan

हिन्दुस्तान

# डीडीएसआर तकनीक का किया गया सफल प्रदर्शन

**पीपीगंज, हिंदुस्तान संवाद।** प्रमाणित कृषि उपकरण निर्माता किसानक्राफ्ट की ओर से गुरुवार को महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र पीपीगंज में सूखे सीधी बुआई धान डीडीएसआर तकनीक का सफल प्रदर्शन किया गया। इस तकनीक से पारंपरिक धान खेती की तुलना में 50 प्रतिशत तक कम पानी की आवश्यकता होती है।

प्रदर्शनी में बताया गया कि एक किलोग्राम पारंपरिक धान के लिए करीब 5,000 लीटर पानी की जरूरत होती है, जबकि डीडीएसआर विधि में केवल 2,000 से 2,500 लीटर पानी पर्याप्त है। इससे उर्वरक, कीटनाशक, श्रम लागत और मीथेन उत्सर्जन में भी उल्लेखनीय कमी आती है। कृषि विज्ञान केंद्र चौक माफी के अध्यक्ष डॉ आर के सिंह ने कहा कि नई किस्में समान उपज के साथ आधा पानी उपयोग करती हैं। आईआरआरआई वैज्ञानिक डॉ अजय पुंडीर ने बताया कि यह तकनीक मिट्टी की उर्वरता और स्वाद दोनों बनाए रखती है।

Published in: Purva Times

# किसानक्राफ्ट ने डी.डी.एस.आर. तकनीक से धान की खेती में 50 प्रतिशत पानी की बचत का दिया संदेश

पूर्वा टाइम्स – बेचन शर्मा

गोरखपुर। पीपीगंज स्थित महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) परिसर में किसानक्राफ्ट कंपनी ने किसानों के लिए सूखी सीधी बुआई धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस – डी.डी.एस.आर.) तकनीक का प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को पारंपरिक धान की खेती की तुलना में कम पानी, कम लागत और पर्यावरण हितैषी खेती के फायदे बताना था। विशेषज्ञों ने बताया कि इस तकनीक से धान की खेती में पानी की खपत लगभग 50 प्रतिशत तक घट जाती है। सामान्य तरीके से एक किलो धान तैयार करने में लगभग पाँच हजार लीटर पानी लगता है, जबकि डी.डी.एस.आर. पद्धति में यह मात्रा घटकर लगभग ढाई हजार लीटर रह जाती है। इसके अलावा यह विधि मजदूरी, उर्वरक, कीटनाशक तथा ऊर्जा की लागत को भी घटाती है। खेतों में पोखर डालने की आवश्यकता न होने से किसान एक ही खेत में दाल, तिलहन और सब्जियों की फसलें भी ले सकते हैं। केवीके प्रमुख डॉ. आर.के. सिंह ने कहा कि धान भारत की खाद्य सुरक्षा की रीढ़ है, परंतु बढ़ती जल संकट की समस्या से उत्पादन पर असर पड़ रहा है। किसानक्राफ्ट की तकनीक से समान उपज के साथ आधा पानी खर्च होगा, जो किसानों के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है। अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अजय पुंडीर ने कहा कि यह विधि मिट्टी की उर्वरता बनाए रखती है और लागत घटाकर लाभ बढ़ाती है। कृषि वैज्ञानिक डॉ. श्वेता सिंह ने कहा कि यह तकनीक पानी की बचत के साथ मीथेन गैस उत्सर्जन को भी घटाती है, जिससे पर्यावरण संरक्षण में मदद मिलती है। किसानक्राफ्ट के प्रबंधक आलोक जैन ने बताया कि इस पद्धति में नर्सरी, पोखर और रोपाई की जरूरत नहीं होती। कंपनी के सेल्स मैनेजर रविकांत सिंह ने कहा कि किसानक्राफ्ट छोटे और सीमांत किसानों की आय बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। कार्यक्रम में सैकड़ों किसानों ने भाग लिया और तकनीक का प्रत्यक्ष अनुभव किया। विशेषज्ञों का मत है कि ऐसी पहलें धान उत्पादन को टिकाऊ, सस्ती और लाभकारी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

Published in: Rashtriya Sahara

# सीधे धान बुआई पर प्रदर्शनी आयोजित

जसवल बाजार (एसएनबी)। किसान क्राफ्ट ने सूखे धान पर महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य किसानों को सूखे सीधे बीज वाले धान उगाने के फायदे के बारे में शिक्षित करना था। आईएसओ प्रमाणित निर्माता उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों के थोक आयातक और वितरक किसान क्राफ्ट के किसानों को बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान का लाभ यह है कि धान की खेती के लिए आवश्यक पानी की तुलना में 50 फीसद कम पानी का उपयोग करता है। और उर्वरक, कीटनाशकों, श्रम, लागत और ग्रीन हाउस गैस मिथेन उत्सर्जन की मात्रा को कम करता है।

एक किलोग्राम पारम्परिक धान के उत्पादन के लिए 5000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। जबकि सूखे प्रत्यक्ष बीज वाले धान के लिए 2000 से 2500 लीटर के बीच की आवश्यकता होती है।यह फसल कम वर्षा वाले क्षेत्रों मे भी उगाई जा सकती है। इससे मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार होता है। प्रदर्शन में बोलते हुए केवीके अध्यक्ष आर, के सिंह ने कहा कि धान की खेती और उत्पादन का भारत की अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान है। पानी की कमी और ज्ञान की कमी जैसी विभिन्न समस्याएं और मुद्दे इस फसल के उत्पादन पर गम्भीर प्रभाव डाल सकते हैं।जो हमारी अर्थव्यवस्था के विकास पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।धान की फसल के खिलाफ बढ़ती समस्याओं से निपटने के लिए हमने किसान क्राफ्ट मे डाई डायरेक्ट सीडेड राइस की नयी किस्में विकसित किया है।

आईआरआरआई वैज्ञानिक डॉ. अजय पुण्डीर ने कहा सूखे सीधे बीज वाले धान का उपयोग करके किसान मिट्टी की उर्वरता के आधार पर अधिक उपज प्राप्त कर सकते हैं पारम्परिक धान की किस्मों की तुलना में स्वाद में कोई बदलाव किए बिना इस धान को सीधे बोया जा सकता है। जिसके परिणामस्वरूप धान की खेती की लाभ प्रदता में वृद्दि होती है इससे खेती की लागत में काफी कमी आती है। किसान क्राफ्ट के मैनेजर आलोक जैन ने कहा सूखे बीज वाले धान उगाने का एक महत्वपूर्ण लाभ है इसमें नर्सरी,पोखरिंग, समतलीकरण, और रोपाई की आवश्यकता नहीं होती है। इस मौके पर डॉ. अजीत श्रीवास्तव, डॉ. संदीप उपाध्याय, डॉ. श्वेता सिंह, जितेन्द्र सिंह, करीब सात दर्जन किसान मौजूद रहे।

Published in: Readers Messenger

# किसान क्राफ्ट ने DDSR प्रदर्शन कर धान की खेती में 50% पानी की बचत, लागत घटाकर आय दोगुनी करें किसान

रीडर्स मैसेंजर नेटवर्क

**गोरखपुर।** पीपीगंज महायोगी गोरखनाथ केवीके (KVK) परिसर में किसानक्राफ्ट ने किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस - DDSR) प्रौद्योगिकी का एक प्रभावी प्रदर्शन आयोजित किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को पारंपरिक धान की खेती की तुलना में कम पानी, कम लागत और पर्यावरण-अनुकूल तरीके से फसल उगाने के फायदों से अवगत कराना था। आईएसओ-प्रमाणित कृषि उपकरण निर्माता और वितरक किसानक्राफ्ट ने इस पहल से किसानों को नई तकनीक अपनाने के लिए प्रेरित किया, जो कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी धान उत्पादन को संभव बनाती है। प्रदर्शन के दौरान विशेषज्ञों ने बताया कि DDSR तकनीक धान की खेती में

पानी की खपत को 50% तक घटा देती है। पारंपरिक विधि में एक किलोग्राम धान उत्पादन के लिए लगभग 5,000 लीटर पानी की जरूरत पड़ती है,जबकि DDSR में यह मात्रा घटकर 2,000-2,500 लीटर रह जाती है। इसके अलावा, यह विधि उर्वरक, कीटनाशकों, श्रम लागत और ग्रीनहाउस गैस (मुख्य रूप से मीथेन) उत्सर्जन को भी काफी कम करती है। खेतों में पोखर डालने की कोई आवश्यकता नहीं होती, जिससे फसल चक्रण, दालों-सब्जियों-तिलहनों के साथ सहफसलन संभव हो जाता है। लंबे समय में यह मिट्टी के स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाती है। के वी के के प्रमुख डॉ. आर के सिंह ने प्रदर्शन को संबोधित करते हुए कहा, 'धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था का आधार है, लेकिन पानी की कमी और अन्य चुनौतियां उत्पादन को प्रभावित कर रही हैं। किसानक्राफ्ट द्वारा विकसित DDSR की नई किस्में समान उपज के साथ 50% कम पानी का उपयोग करती हैं, जो किसानों के लिए वरदान साबित हो सकती हैं।' अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (IRRI) के वैज्ञानिक डॉ. अजय पुंडीर ने जोर देकर कहा, DDSR से किसान मिट्टी की उर्वरता के आधार पर अधिक उपज हासिल कर सकते हैं।

Published in: sanskardarshan

संस्कार दर्शन

# किसानक्राफ्ट ने DDSR प्रदर्शन कर धान की खेती में 50% पानी की बचत, लागत घटाकर आय दोगुनी करें किसान

गोरखपुर पीपीगंज महायोगी गोरखनाथ केवीके (KVK) परिसर में किसानक्राफ्ट ने किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस – DDSR) प्रौद्योगिकी का एक प्रभावी प्रदर्शन आयोजित किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को पारंपरिक धान की खेती की तुलना में कम पानी, कम लागत और पर्यावरण-अनुकूल तरीके से फसल उगाने के फायदों से अवगत कराना था। आईएसओ-प्रमाणित कृषि उपकरण निर्माता और वितरक किसानक्राफ्ट ने इस पहल से किसानों को नई तकनीक अपनाने के लिए प्रेरित किया, जो कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी धान उत्पादन को संभव बनाती है।
प्रदर्शन के दौरान विशेषज्ञों ने बताया कि DDSR तकनीक धान की खेती में पानी की खपत को 50% तक घटा देती है। पारंपरिक विधि में एक किलोग्राम धान उत्पादन के लिए लगभग 5,000 लीटर पानी की जरूरत पड़ती है,जबकि DDSR में यह मात्रा घटकर 2,000-2,500 लीटर रह जाती है। इसके अलावा, यह विधि उर्वरक, कीटनाशकों, श्रम लागत और ग्रीनहाउस गैस (मुख्य रूप से मीथेन) उत्सर्जन को भी काफी कम करती है। खेतों में पोखर डालने की कोई आवश्यकता नहीं होती, जिससे फसल चक्रण, दालों-सब्जियों-तिलहनों के साथ सहफसलन संभव हो जाता है। लंबे समय में यह मिट्टी के स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाती है।के वी के के प्रमुख डॉ. आर के सिंह ने प्रदर्शन को संबोधित करते हुए कहा, "धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था का आधार है, लेकिन पानी की कमी और अन्य चुनौतियां उत्पादन को प्रभावित कर रही हैं। किसानक्राफ्ट द्वारा विकसित DDSR की नई किस्में समान उपज के साथ 50% कम पानी का उपयोग करती हैं, जो किसानों के लिए वरदान साबित हो सकती हैं।"अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (IRRI) के वैज्ञानिक डॉ. अजय पुंडीर ने जोर देकर कहा, "DDSR से किसान मिट्टी की उर्वरता के आधार पर अधिक उपज हासिल कर सकते हैं। पारंपरिक किस्मों की तुलना में स्वाद में कोई बदलाव नहीं आता, लेकिन खेती की लागत में भारी कटौती होती है, जिससे लाभप्रदता बढ़ती है।"किसानक्राफ्ट के असिस्टेंट मैनेजर आलोक जैन ने DDSR के व्यावहारिक लाभों पर प्रकाश डालते हुए बताया, "इस विधि में नर्सरी तैयार करने, पोखर डालने, समतलीकरण और रोपाई जैसे कदमों की जरूरत नहीं पड़ती। यह पर्यावरण-अनुकूल है, कम मीथेन उत्सर्जन पैदा करती है और कीट-रोगों का प्रकोप भी कम रखती है।" कृषि वैज्ञानिक डॉ. श्वेता सिंह ने 'लो-मीथेन धान' पहल के तहत DDSR को बढ़ावा देने पर जोर देते हुए कहा, "यह तकनीक न केवल पानी की बचत करती है, बल्कि मीथेन उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी लाकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान देती है। उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में इसकी अपनाव को प्रोत्साहन देना आवश्यक है।" किसानक्राफ्ट के सेल्स मैनेजर रविकांत सिंह ने कंपनी की भूमिका पर चर्चा करते हुए कहा कि यह आईएसओ-प्रमाणित संगठन छोटे और सीमांत किसानों की आय, फसल उत्पादकता और खेती के क्षेत्र को बढ़ाने पर केंद्रित है। मात्र कम समय में देशभर में फैल चुकी यह कंपनी 5,000 से अधिक डीलरों, एक विनिर्माण इकाई और 14 क्षेत्रीय कार्यालयों के साथ अखिल भारतीय वितरण नेटवर्क संचालित करती है।इस प्रदर्शन में सैकड़ों किसानों ने भाग लिया और DDSR उपकरणों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया। विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसी पहलें धान उत्पादन को सतत और लाभदायक बनाने में मील का पत्थर साबित होंगी।

EVENT: 29-10-2025,Pachal, Maharastra

Published in: Prahar

# पाचल येथे किसान क्राफ्टने आयोजित केलेल्या कोरडी थेट भात पेरणी तंत्रज्ञान प्रात्यक्षिकाला शेतकऱ्यांचा उत्स्फूर्त प्रतिसाद

**राजापूर (वार्ताहर) :**

किसानक्राफ्ट या आयएसओ-प्रमाणित उत्पादक, घाऊक आयातदार आणि उच्च दर्जाच्या कृषी उपकरणांचे वितरक असलेल्या किसान क्राफ्टने महाराष्ट्रातील पाचल येथे शेतकऱ्यांसाठी कोरड्या थेट पेरणीच्या भातावरील प्रदर्शनाचे आयोजन केले होते. तळवडे येथील प्रभावती हॉलमध्ये आयोजित केलेल्या या प्रदर्शनाला शेतकऱ्यांचा उत्स्फूर्त प्रतिसाद लाभला.

कोरड्या सरळ बियाणे असलेल्या भाताचा फायदा असा आहे की ते भात लागवडीसाठी आवश्यक असलेल्या पाण्यापेक्षा ५०% कमी पाणी वापरते आणि खते, कीटकनाशके, मजुरी खर्च आणि हरितगृह वायू (मिथेन) उत्सर्जन कमी करते. एक किलो पारंपरिक भाताच्या उत्पादनासाठी ५,००० लिटर पाणी लागतं, तर कोरड्या थेट बियाणं असलेल्या धानाला २,००० ते २,५०० लिटर पाणी लागतं. कमी पर्जन्यमान असलेल्या ठिकाणीही हे पीक घेता येते. कोरड्या थेट बियाणे असलेल्या भाताचे कोरड्या शेतात कोरडे थेट बियाणे आहे. शेतात खड्डे टाकण्याची गरज नाही. पिकांची फेरपालट शक्य आहे. डाळी, भाजीपाला आणि तेलबियांचे सहपीक देखील शक्य आहे. दीर्घकाळापर्यंत, यामुळे मातीचे आरोग्य सुधारते.

यावेळी बोलताना किसानक्राफ्टचे मॅनेजर सौरभ पाटील म्हणाले की, भात लागवड आणि उत्पादन हे भारताच्या अर्थव्यवस्थेत मोठे योगदान आहे. पाणीटंचाई आणि ज्ञानाचा अभाव यासारख्या विविध समस्या आणि समस्यांचा या पिकाच्या उत्पादनावर गंभीर परिणाम होऊ शकतो, ज्याचा आपल्या अर्थव्यवस्थेच्या विकासावर नकारात्मक परिणाम होऊ शकतो. भाताच्या पिकाच्या वाढत्या समस्यांवर मात करण्यासाठी, आम्ही किसान क्राफ्टमध्ये कोरड्या थेट बियाणांच्या तांदळाची नवीन जाती विकसित केली आहेत, जी समान उत्पादनासह ५०% कमी पाणी वापरतात .

कोरड्या सरळ बियाण्यांच्या भात लागवडीचा एक महत्त्वाचा फायदा म्हणजे त्याला रोपवाटिका, तलाव, सपाटीकरण आणि लावणीची गरज भासत नाही. हे पर्यावरणस्नेही पीक आहे कारण ते किफायतशीर पीक आहे तसेच कमी मिथेन उत्सर्जन करते कारण यामुळे कीटक आणि रोगांचा प्रादुर्भाव कमी होतो.

किसानक्राफ्ट ही एक आयएसओ-प्रमाणित उत्पादक, घाऊक आयातदार आणि उच्च-गुणवत्तेच्या कृषी उपकरणांचा वितरक आहे, जी अल्पभूधारक असलेल्या अल्पभूधारक शेतकऱ्यांचे उत्पन्न, पीक उत्पादन आणि लागवडीचे क्षेत्र वाढविण्यात मदत करून त्यांचे जीवनमान सुधारण्यावर लक्ष केंद्रित करते. अगदी अल्पावधीतच, किसानक्राफ्ट देशव्यापी उपस्थितीसह या क्षेत्रातील सर्वात प्रतिष्ठित आणि विश्वासार्ह कंपन्यांपैकी एक बनली आहे. किसानक्राफ्टचे संपूर्ण भारतातील वितरण नेटवर्क आहे. या प्रात्यक्षिक कार्यक्रमाला किसानक्राफ्टचे मॅनेजर सौरभ पाटील, ॲग्रोनोमिष्ट स्मित कदम, राजापूरचे कृषी अधिकारी सकपाळ आणि पाचल परिसरातील शेतकरी मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

Published in: दैनिक पुढारी -सुरेश गुडेकर

# पाचलमध्ये ड्राय डायरेक्ट पेरणी भात तंत्रज्ञान प्रात्यक्षिकाला शेतकऱ्यांचा उत्स्फूर्त प्रतिसाद

**पाचल :** पाचल येथे शेतकऱ्यांसाठी कोरड्या थेट पेरणीचे भातावरील प्रदर्शन पार पडले. तळवडे येथील प्रभावती हॉलमध्ये आयोजित केलेल्या या प्रदर्शनाला शेतकऱ्यांचा उत्स्फूर्त प्रतिसाद लाभला. कोरड्या सरळ बियाणे असलेल्या भाताचा फायदा असा आहे की, ते भात लागवडीसाठी आवश्यक असलेल्या पाण्यापेक्षा ५० टक्के कमी पाणी वापरते आणि खते, कीटकनाशके, मजुरी खर्च आणि हरितगृह वायू (मिथेन) उत्सर्जन कमी करते. एक किलो पारंपरिक भाताच्या उत्पादनासाठी ५,००० लिटर पाणी लागतं, तर कोरड्या थेट बियाणं असलेल्या धानाला २,००० ते २,५०० लिटर पाणी लागतं. कमी पर्जन्यमान असलेल्या ठिकाणीही हे पीक घेता येते. कोरड्या थेट बियाणे असलेल्या भाताचे कोरड्या शेतात कोरडे थेट बियाणे आहे. शेतात खड्डे टाकण्याची गरज नाही. पिकांची फेरपालट शक्य आहे. डाळी, भाजीपाला आणि तेलबियांचा सहपीकदेखील शक्य आहे. दीर्घकाळापर्यंत यामुळे मातीचे आरोग्य सुधारते.

Published in: सुरेश गुडेकर - दैनिक तरुण भारत

# पाचलमध्ये कोरड्या थेट पेरणीच्या भाताचे प्रदर्शन उत्साहात

**वार्ताहर**

पांचल

किसान क्राफ्टने महाराष्ट्रातील पाचल येथे शेतकऱ्यांसाठी कोरड्या थेट पेरणीच्या भातावरील प्रदर्शनाचे आयोजन केले होते. तळवडे येथील प्रभावती हॉलमध्ये आयोजित केलेल्या या प्रदर्शनाला शेतकऱ्यांचा प्रतिसाद लाभला.

कोरड्या सरळ बियाणे असलेल्या भाताचा फायदा असा आहे की, ते भात लागवडीसाठी आवश्यक असलेल्या पाण्यापेक्षा ५० टक्के कमी पाणी वापरते आणि खते, कीटकनाशके, मजुरी खर्च आणि हरितगृह वायू (मिथेन) उत्सर्जन कमी करते. एक किलो पारंपरिक भाताच्या उत्पादनासाठी ५ हजार लिटर पाणी लागतं, तर कोरड्या थेट बियाण असलेल्या धानाला दोन ते अडीज हजार लिटर पाणी लागतं. या प्रात्यक्षिकप्रसंगी बोलताना किसानक्राफ्टचे मॅनेजर सौरभ पाटील म्हणाले कि, भात लागवड आणि उत्पादन हे भारताच्या अर्थव्यवस्थेत मोठे योगदान आहे. पाणीटंचाई आणि ज्ञानाचा अभाव यासारख्या विविध समस्या आणि समस्यांचा या पिकाच्या उत्पादनावर गंभीर परिणाम होऊ शकतो, ज्याचा आपल्या अर्थव्यवस्थेच्या विकासावर नकारात्मक परिणाम होऊ शकतो. भाताच्या पिकाच्या वाढत्या समस्यांवर मात करण्यासाठी आम्ही किसान क्राफ्टमध्ये कोरड्या थेट बियाणांच्या तांदळाची नवीन जाती विकसित केली आहेत. जी समान उत्पादनासह ५० टक्के कमी पाणी वापरतात.

सुक्या सरळ वाणाचा वापर करून शेतकऱ्यांना जया प्रात्यक्षिक कार्यक्रमाला किसानक्राफ्टचे मॅनेजर सौरभ पाटील, ॲग्रोनोमिष्ट स्मित कदम, राजापूरचे कृषी अधिकारी सकपाळ व पाचल परिसरातील शेतकरी उपस्थित होते..

EVENT: 30-10-2025. Ayodhya
Published in: Amar Ujala

# अर्थव्यवस्था में खेती की अहम भूमिका : डॉ पंकज

मया बाजार। किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की दिशा में किसान क्राफ्ट लिमिटेड ने क्षेत्र के सरैया गांव में बृहस्पतिवार को एक तकनीकी प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। कृषि विज्ञान केंद्र अयोध्या के डॉ पंकज सिंह (साइंटिस्ट) ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है, लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है।

कहा कि डीएसआर तकनीक से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। किसान क्राफ्ट के मैनेजर सीड्स डॉ सौजन्या ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीली है और स्वाद में कोई अंतर नहीं आता। डॉ वैभव सिंह ने कहा कि लो-मीथेन धान के एक हिस्से के रूप में यूपी में डीएसआर खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह न केवल पानी की बचत करती है बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम योगदान देती है। सहायक मैनेजर आलोक जैन ने डीएसआर तकनीक की जानकारी दी। कार्यक्रम का आयोजन प्रगति शील किसान राकेश वर्मा के सहयोग से किया गया। सेल्स मैनेजर अजय वर्मा सहित कई किसान उपस्थित मौजूद रहे।(संवाद)

Published in: Amar Ujala(2)

# अर्थव्यवस्था में खेती की अहम भूमिका : डॉ पंकज

**मया बाजार।** किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की दिशा में किसान क्राफ्ट लिमिटेड ने क्षेत्र के सरैया गांव में बृहस्पतिवार को एक तकनीकी प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। कृषि विज्ञान केंद्र अयोध्या के डॉ. पंकज सिंह (साइंटिस्ट) ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है, लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है।

कहा कि डीएसआर तकनीक से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। किसान क्राफ्ट के मैनेजर सीड्स डॉ. सौजन्या ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीली है और स्वाद में कोई अंतर नहीं आता। डॉ. वैभव सिंह ने कहा कि लो-मीथेन धान के एक हिस्से के रूप में यूपी में डीएसआर खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह न केवल पानी की बचत करती है बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम योगदान देती है। सहायक मैनेजर आलोक जैन ने डीएसआर तकनीक की जानकारी दी। कार्यक्रम का आयोजन प्रगति शील किसान राकेश वर्मा के सहयोग से किया गया। सेल्स मैनेजर अजय वर्मा सहित कई किसान उपस्थित मौजूद रहे। (संवाद)

Published in: Avadh Gatha

# किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की पहल

## सरैया गांव में सूखे सीधे बीज वाले धान पर हुआ तकनीकी प्रदर्शन

**अवध गाथा संवाददाता**

गोसाईंगंज-अयोध्या। किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने

की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत किसानक्राफ्ट लिमिटेड ने क्षेत्र के सरैया गांव में ह्लसूखे सीधे बीज वाले धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस - डीएसआर)ह्व पर एक तकनीकी प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को डीएसआर तकनीक के लाभों से परिचित कराना और धान की खेती में पानी की बचत व लागत में कमी के उपायों पर जागरूक करना था। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र अयोध्या डॉ पंकज सिंह (साइंटिस्ट) ने कहा कि ह्लधान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है, लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है। डीएसआर तकनीक से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। किसानक्राफ्ट के मैनेजर सीड्स डॉ सौजन्या ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खचीर्ली है और स्वाद में कोई अंतर नहीं आता। सहायक मैनेजर आलोक जैन ने कहा कि ह्लडीएसआर तकनीक से नर्सरी, पोखरिंग, समतलीकरण और रोपाई की आवश्यकता समाप्त हो जाती है, जिससे श्रम लागत में भारी कमी आती है। यह पर्यावरण के अ है क्योंकि इसमें मीथेन उत् कम होता है और कीटों व बीमारियों का प्रकोप भी घटता है। डॉ वैभव सिंह ने कहा कि ह्लो-मीथेन धान के एक हिस्से के रूप में यूपी में डीएसआर खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह न केवल पानी की बचत करती है बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम योगदान देती है। कार्यक्रम का आयोजन प्रगति शील किसान राकेश वर्मा के सहयोग से किया गया। किसानक्राफ्ट के सेल्स मैनेजर अजय वर्मा ने बताया कि कंपनी एक आईएसओ-प्रमाणित निमार्ता, थोक आयातक और उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उपकरणों की वितरक है। देशभर में 5000 से अधिक डीलरों, एक विनिर्माण इकाई और 14 क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से किसानक्राफ्ट सीमांत किसानों की पैदावार बढ़ाने और उनकी आजीविका में सुधार के लिए कार्यरत है। इस मौके पर बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे और डीएसआर तकनीक के व्यावहारिक लाभों को प्रत्यक्ष रूप से देखा।

Published in: Dainik Jagaran

# किसानक्राफ्ट ने डीडीएसआर तकनीक का किया सफल प्रदर्शन

संवाद सूत्र, पीपीगंज : प्रमाणित कृषि उपकरण निर्माता किसानक्राफ्ट ने गुरुवार को महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र, पीपीगंज में किसानों के लिए सूखे सीधी बुआई धान (डीडीएसआर) प्रौद्योगिकी का दो दिवसीय प्रदर्शनी आयोजित की। इस प्रदर्शनी के द्वितीय दिवस पर किसानों को धान की फसल पर विस्तार से जानकारी दी गई।

प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य किसानों को इस तकनीक के लाभों से अवगत कराना था, जो पारंपरिक धान खेती की तुलना में 50 प्रतिशत कम पानी का उपयोग करती है। प्रदर्शनी में बताया गया कि एक किलोग्राम पारंपरिक धान के लिए 5,000 लीटर पानी लगता है, जबकि डीडीएसआर में मात्र दो हजार से ढाई हजार लीटर पानी की आवश्यकता होती है। यह तकनीक उर्वरक, कीटनाशक, श्रम लागत और मीथेन उत्सर्जन को कम करती है। सूखे खेतों में सीधा बीजारोपण संभव है, बिना पोखरिंग के। कृषि विज्ञान केंद्र चौक माफी के अध्यक्ष डा. आरके सिंह ने कहा कि पानी की कमी से धान उत्पादन प्रभावित होता है। हमारी नई किस्में समान उपज के साथ 50 प्रतिशत कम पानी खपत करती हैं। आइआरआरआइ वैज्ञानिक डा. अजय पुंडीर ने बताया कि यह मिट्टी की उर्वरता पर अधिक उपज देती है। किसानक्राफ्ट के आलोक जैन ने कहा कि नर्सरी-रोपाई की जरूरत नहीं, यह पर्यावरण अनुकूल है।

Published in: Gao desh

# किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की पहल

**सरैया गांव में सूखे सीधे बीज वाले धान पर हुआ तकनीकी प्रदर्शन**

**गोसाईंगंज-अयोध्या।**

किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत किसानक्राफ्ट लिमिटेड ने क्षेत्र के सरैया गांव में सूखे सीधे बीज वाले धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस - डीएसआर) पर एक तकनीकी प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को डीएसआर तकनीक के लाभों से परिचित कराना और धान की खेती में पानी की बचत व लागत में कमी के उपायों पर जागरूक करना था। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र अयोध्या डॉ पंकज सिंह (साइंटिस्ट) ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है, लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है। डीएसआर तकनीक से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। किसानक्राफ्ट के मैनेजर सीड्स डॉ सौजन्या ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खचीर्ली है और स्वाद में कोई अंतर नहीं आता। सहायक मैनेजर आलोक जैन ने कहा कि डीएसआर तकनीक से नर्सरी, पोखरिंग, समतलीकरण और रोपाई की आवश्यकता समाप्त हो जाती है, जिससे श्रम लागत में भारी कमी आती है। इसमें मीथेन उत्सर्जन कम होता है और कीटों व बीमारियों का प्रकोप भी घटता है। डॉ वैभव सिंह ने कहा कि लो-मीथेन धान के एक हिस्से के रूप में यूपी में डीएसआर खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह न केवल पानी की बचत करती है बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम योगदान देती है।

Published in: Gareebonka sahara

# किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की पहल

**गोसाईगंज-अयोध्या।** किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत किसानक्राफ्ट लिमिटेड ने क्षेत्र के सरैया गांव में ÷सूखे सीधे बीज वाले धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस - डीएसआर)÷ पर एक तकनीकी प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को डीएसआर तकनीक के लाभों से परिचित कराना और धान की खेती में पानी की बचत व लागत में कमी के उपायों पर जागरूक करना था। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र अयोध्या डॉ पंकज सिंह (साइंटिस्ट) ने कहा कि ÷धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है, लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है।

Published in: Rashtriya Sahara

# आधुनिक तकनीक से खेती करने के सिखाये गुर

**गोसाईंगंज-अयोध्या।** किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने लिए किसान क्राफ्ट लिमिटेड ने क्षेत्र के सरैया गांव में सूखे सीधे बीज वाले धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस-डीएसआर) पर तकनीकी प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को डीएसआर तकनीक के लाभों से परिचित कराना और धान की खेती में पानी की बचत व लागत में कमी के उपायों पर जागरूक करना था।

कार्यक्रम में मसौधा कृषि विज्ञान केंद्र के कृषि वैज्ञानिक डॉ. पंकज सिंह ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है, लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है। डीएसआर तकनीक से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते है। किसान क्राफ्ट के मैनेजर डॉ. सौजन्या ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते है। यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीली है और स्वाद में कोई अंतर नहीं आता।

Published in: Samay Chakra Times

# अयोध्या के किसानों के लिए जल संरक्षण की क्रांति: मया बाजार में DSR तकनीक का प्रदर्शन, 50% पानी और श्रम की बचत का दावा

मया बाजार (अयोध्या)। किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत, किसानक्राफ्ट लिमिटेड ने क्षेत्र के सरैया गाँव में "सूखे सीधे बीज वाले धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस - DSR)" पर एक तकनीकी प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य धान की खेती में पानी की बचत और लागत में कमी के उपायों पर किसानों को जागरूक करना था।

कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र, अयोध्या के वैज्ञानिक डॉ. पंकज सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा, "घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने बड़ी चुनौती है। डीएसआर तकनीक से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं।"

किसानक्राफ्ट के मैनेजर (सीड्स) डॉ. सौजन्या ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं, साथ ही यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीली है और स्वाद में कोई अंतर नहीं आता। सहायक मैनेजर आलोक जैन ने जानकारी दी कि डीएसआर तकनीक से नर्सरी, पोखरिंग, समतलीकरण और रोपाई की आवश्यकता समाप्त हो जाती है, जिससे श्रम लागत में भारी कमी आती है। उन्होंने यह भी बताया कि यह पर्यावरण के अनुकूल है, क्योंकि इसमें मीथेन उत्सर्जन कम होता है और कीटों व बीमारियों का प्रकोप भी घटता है।

डॉ. वैभव सिंह ने स्पष्ट किया कि लो-मीथेन धान के एक हिस्से के रूप में उत्तर प्रदेश में डीएसआर खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है, जो जल संरक्षण के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण में भी अहम योगदान देता है। प्रगतिशील किसान राकेश वर्मा के सहयोग से आयोजित इस मौके पर बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे और डीएसआर तकनीक के व्यावहारिक लाभों को प्रत्यक्ष रूप से देखा।

Published in: Swatantra Chetana

# डीएसआर तकनीक से किसान पानी की बचत कर सकते हैं : डा पंकज

स्वतंत्र चेतना, गोसाईगंज। किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत किसान क्राफ्ट लिमिटेड ने क्षेत्र के सरैया गांव में सूखे सीधे बीज वाले धान (ड्राई डायरेक्ट सीडेड राइस - डीएसआर) पर एक तकनीकी प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को डीएसआर तकनीक के लाभों से परिचित कराना और धान की खेती में पानी की बचत व लागत में कमी के उपायों पर जागरूक करना था। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र डा पंकज सिंह ने कहा कि धान की खेती भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाती है, लेकिन घटते जलस्तर और बढ़ती लागत किसानों के सामने चुनौती बन रही है। डीएसआर तकनीक से किसान समान उत्पादन के साथ 50 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। किसान क्राफ्ट के मैनेजर सीड्स ड सौजन्या ने बताया कि सूखे सीधे बीज वाले धान के उपयोग से किसान मिट्टी की उर्वरता के अनुसार बेहतर उपज प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीक पारंपरिक धान की तुलना में कम खर्चीली है और स्वाद में कोई अंतर नहीं आता। कार्यक्रम में सहायक मैनेजर आलोक जैन, ड वैभव सिंह, अजय वर्मा, प्रगति शील किसान राकेश वर्मा समेत तमाम किसान उपस्थित रहे।